सम्पादकीय...

आस्था का प्रतीक : मुकाम मेला

श्रद्धालुओं से निवेदन

बिश्नोई समाज व संस्कृति उत्सवधर्मी हैं। इस समाज में सभी हिन्दू पर्वों-उत्सवों का तो सोल्लास आयोजन होता ही है साथ ही साथ कुछ अपने विशेष पर्वों, उत्सवों व मेलों का आयोजन भी होता है। वस्तुत: ये पर्व-उत्सव समाज व संस्कृति में नव रक्त का संचार करते हैं। इनसे मन प्रफुल्लित होता है, आत्मा की शुद्धि होती है और मस्तिष्क चिन्तन की ओर बढ़ता है। मेलों में इन सबके अतिरिक्त आपसी मेल-मिलाप भी बढ़ता है और सामाजिक संगठन सुदृढ़ होता है। बिश्नोई समाज में अनेक छोटे-बड़े मेले आयोजित होते हैं, जिनमें मुकाम में लगने वाले दो मेले सर्वाधिक प्रसिद्ध है। ये मेले आसोज और फाल्गुन मास की अमावस्या को लगते हैं। गुरु जम्भेश्वर भगवान का समाधि-स्थल होने के कारण मुकाम का धार्मिक महत्त्व स्वत: सिद्ध है। पूरे भारत वर्ष के श्रद्धालु यहां पहुंचकर गुरु जम्भेश्वर भगवान के चरणों में नतमस्तक होकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं।

बिश्नोई समाज का महाकुंभ होने के कारण मुकाम मेले में बिश्नोइयों के अतिरिक्त बिश्नोई धर्म एवं संस्कृति में रूचि रखने वाले अन्य लोग भी बहुतायत में पहुंचते हैं। बिश्नोई धर्म पर शोध करने वाले विदेशी लोग भी इस महाकुंभ में पहुंचते हैं। ऐसे में मुकाम मेले में हमारे आचरण, वेशभूषा, आस्था-श्रद्धा, पूजा पद्धति, व्यवस्था आदि का संदेश बहुत दूर तक जाता है। यहां दो-तीन बातों की ओर ध्यान देना अति आवश्यक है।

मुकाम सहित सभी जांभाणी मेलों में आयोजित होने वाले विशाल यज्ञ हमारी आस्था के साथ-साथ परम्परा के प्रतीक हैं, जो सभी को आकर्षित व प्रभावित करते हैं। परन्तु उस समय कुछ असहज लगता है जब श्रद्धालु अमावस्या को प्रात: हवन-ज्योति प्रज्जवलित ही नहीं होने देते और घी-नारियल को आहुत करने की होड़ मचा देते हैं। सेवकदल के माननीय सदस्यों की प्रार्थना पर ध्यान न देकर दूर से ही घी-नारियल फेंकना आरम्भ कर देते हैं जिससे दूसरों के कपड़े तक खराब कर देते हैं। यज्ञ की गणना देवताओं में होती है और देवताओं को भोजन ऐसे नहीं दिया जाता है। समझ नहीं आता कि ऐसी क्या शीघ्रता होती है जबकि आहुति देने के बाद वे श्रद्धालु पूरे दिन मुकाम में ही रहते हैं। कुछ ऐसा ही दृश्य संभराथल धोरे पर भी देखने को मिलता है। इससे यज्ञ देवता का अपमान तो होता ही है साथ ही बाहर से आये हुए लोगों पर हमारा क्या प्रभाव पड़ता होगा ? इसका अनुमान आप स्वयं करें।

मुकाम मेले के अवसर पर अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर सेवक दल द्वारा विशाल भण्डारा चलाया जाता है। कई बार भीड़ अधिक बढ़ जाने पर श्रद्धालु धैर्यहीनता का परिचय देने लग जाते हैं, जिसका दूसरे लोगों पर अत्यधिक नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उपर्युक्त दोनों ही अवसरों पर हमें धैर्य व अनुशासन का परिचय देते हुए सेवकदल का सहयोग करना चाहिए क्योंकि धैर्य धर्म का लक्षण होता है और धर्म के अर्जन के लिए ही हम मुकाम जाते हैं।

गुरु जम्भेश्वर भगवान और बिश्नोई समाज की पहचान पर्यावरण रक्षक के रूप में की जाती है। परन्तु मेले के दौरान जितने पॉलिथीन मुकाम और संभराथल पर हम बिखेर कर आते हैं उससे तो कुछ और ही संदेश जाता है। श्रद्धालुओं से अनुरोध है कि पर्यावरण शुद्धि में किसी भी प्रकार का विघ्न उत्पन्न करना गुरु महाराज के उपदेशों की उल्लंघना है इसलिए ऐसा न करें।

अभी आने वाले 27 सितम्बर को मुकाम का आसोजी मेला है, जिसकी ढेर सारी शुभकामनाएं। आशा है आप उपर्युक्त बातों को अन्यथा न लेते हुए मेले में इनकी ओर ध्यान देंगे।

गुरुवाणी

सबद – 31

देव तणै दरबार, जमाती यौं कही।
दावै जकै नै दीयै, पुन होत क नही।
भूखी आतमा जाण, दीजियै यों रही।
परिहां विसन भगत है, जाण सुवेद मै हि कही।

एक बार सम्भराथल पर आकर जमाती लोगों ने इस प्रकार से कहा- कि किसी देव को तन, मन, धन अर्पण करने से पुण्य होता है या नहीं ? हमने तो यह सुना है कि इस शरीर में स्थित जीवात्मा को जब भी कोई कष्ट हो तो देवताओं को प्रसन्न किया जाता है। उन्हें नाना प्रकार की भेंट भी चढ़ाते हैं, यह ठीक ही होगा या नहीं, यहां पर कुछ लोग, यों भी कहते हैं कि सर्वोपरि देव तो विष्णु परमात्मा ही है। वेद में भी ऐसा ही कहा है। इस सम्बन्ध में आप हमें सत्य मार्ग का निर्देश दे। तब गुरु जाम्भो जी ने शब्द उच्चारण किया।

ओ३म् भल मूल सींचो रे प्राणी, ज्यूं का भल बुद्धि पावै।
जामण मरण भव काल जु चूकै, तो आवगवण न आवै।
भल मूल सींचो रे प्राणी, ज्यूं तरवर मेल्हत डालूं।

भावार्थ- हे प्राणी! इन कल्पित भूत, प्रेत, देवी, देवता को छोड़कर भगवान विष्णु की ही सेवा तथा समर्पण करो। जिस प्रकार से सुवृक्ष के मूल में पानी देने से डालिया, पते, फूल-फल सभी प्रफुल्लित हो जाते हैं, उसी प्रकार से सभी के मूल रूप परमात्मा विष्णु का जप, स्मरण करने से अन्य सभी प्रकार के देवी देवता स्वत: ही प्रसन्न हो जायेंगे तथा कुमूल रूप भूत-प्रेत, जोगणी आदि को कभी मत सींचो, वे तो सदा ही दुष्ट प्रकृति के है इनका फल भी दुखदायी ही होगा। उस भले मूल को सींचने से प्रथम तो भली बुद्धि पैदा होगी, उससे विवेक द्वारा हम सदा ही जीवन में शुभ कर्म करेंगे, जिससे संसार का भय, मृत्यु भय मिट जायेगा और जन्म मृत्यु के चक्कर से सदा के लिये छूट जायेंगे। इसीलिए भले मूल की ही सिंचाई करो। जिस प्रकार से सिंचाई किया हुआ वृक्ष डालाया पते निकालता है तथा फलदायी होता है उसी प्रकार से तुम्हारा किया हुआ यह शुभ कर्म उत्तरोतर वृद्धि को प्राप्त होगा।

हरि परि हरि की आण न मानी, झंख्यां झूल्या आलूं।
देवा सेवां टेव न जांणी, न बंच्या जम कालूं।

हरि विष्णु परमेश्वर की आशा तो छोड़ दी तथा जगत एवं कल्पित देवों से आशा जोड़ ली है तथा हरि का बताया हुआ शुभ मार्ग और मार्यादा को तोड़ दिया, उसे स्वीकार नहीं किया। इस संसार के लोगों की कुसंगति प्राप्त कर के आल-बाल झूठ-कपट व्यर्थ की बाणी बोलता रहा। न ही तुमने कभी परम देवों की पूजा-सेवा करने का तरीका विधि-विधान जाना तो फिर यमदूतों की फांसी से कैसे बचेगा। तेरे को तो इस जीवन में ही यमदूतों ने पकड़ रखा है, तूने कभी छूटने का विचार भी तो नहीं किया तो तुझे कौन मुक्ति दिलायेगा।

भूलै प्राणी विष्णु न जंप्यों, मूल न खोज्यों,
फिर फिर जोया डालूं।
बिन रैणायर हीरे नीरे नग न सीपै, तके न खोला नालू।

भूले भटके प्राणी! सृष्टि के मूल रूप विष्णु परमात्मा का तो स्मरण-भजन, जप नहीं किया तथा डाल-पात रूप देवी देवताओं का ही सहारा लिया। ये डाल पते मूल पर ही टिके हुए हैं, स्वत: ही समर्थ नहीं है। इसलिए कमजोरों का आधार तुम्हे लेकर डूब जायेगा। क्योंकि जिस प्रकार से समुद्र के बिना हीरा अन्य जल में मिलता नहीं है। स्वाति नक्षत्र की बूंद प्राप्ति बिना सीपी के मुख में भी मोती नहीं आता और छोटे मोटे नदी नालों में में भी बहनें वाले जल में स्थिरता नहीं होती, जल्दी ही सूख जाते हैं। उसी प्रकार से परमात्मा विष्णु के बिना इन कल्पित देवताओं में भी वह अमूल्य दिव्य ज्योति तथा स्थिरता, गांभीर्य कहा है।

चलन चलंते वास वसंतै, जीव जीवंतै सास फुरंतै।
काया निवंती, कांयरे प्राणी विष्णु न घाती भालूं।

जब तक शरीर स्वस्थ है, कार्य करने में समर्थ है, तब तक चलते फिरते, उठते-बैठते जीवन सम्बंधी अन्य कार्य करते हुए तथा श्वास चलते हुए श्वासों ही श्वास तेने परमात्मा का स्मरण नहीं किया। इस शरीर को अहंकार रहित कर के किसी के आगे झुकाया तक

नहीं। तो हे प्राणी! तुमने परमात्मा विष्णु से सम्बंध नहीं जोड़ा। ऐसी कौन सी विपति तेरे उपर आ पड़ी थी जिससे तुमने संसार से तो मेल कर लिया था किन्तु परमपिता परमात्मा से नहीं कर सका।

घड़ी घटन्तर पहर पटन्तर रात दिनंतर, मास पखंतर, क्षिण ओल्हख्या कालूं।
मीठा झूठा मोह बिटंबण, मकर समाया जालूं।

यह समय घड़ी, पहर, रात, दिन, पक्ष, महीना, वर्ष, उतरायन, दक्षिणायन करते हुए व्यतीत हो जाता है। इन खंडों में बंटा हुआ समय मालूम पड़ता है। किन्तु काल का कोई बंटवारा नहीं हाता, वह जब चाहे तब आपके जीवन का अन्त कर सकता है। यह संसार उपर से देखने से तो मीठा प्रिय लगता है, किन्तु झूठा है, यह अपने मोह जाल में इस प्रकार से फंसाता है जैसे झीवर मच्छी को जाल में फंसा लेता है। मछली तो मीठे आटे की गोली खाने के लोभ में आकर जाल में फंस जाती है फिर छटपटाते हुए प्राणों को गंवा बैठती है। उसी प्रकार मानव भी संसार सुख के लिये पहले तो फंस जाता है और फिर छटपटाता है किन्तु निकल नहीं पाता, उस मोह माया के जाल को काट नहीं सकता। वैसे ही अमूल्य जीवन को नष्ट कर देता है।

कबही को बाइंदों बाजत लोई, घड़िया मस्तक तालूं।
जीवां जूणी पड़ै परासा, ज्यूं झीवर मच्छी मच्छा जालूं।

कभी ऐसा भयंकर वायु का झोंका आयेगा जो इस शरीर का तोड़ मरोड़ करके इस जीव को ले जायेगा। जिस प्रकार से असावधानी के कारण सिर पर रखा हुआ घड़ा हवा के झोंके से नीचे ताल पर गिर कर फूट जाता है। इसलिये तुम्हारा शरीर भी कच्चे घड़े के समान ही है। शरीर से निकले हुए जीव के गले में यमदूत फांसी डालेगा और चौरासी लाख योनियो में भटकायेगा। जिस प्रकार झींवर मछली को मारने के लिये जाल डाल देता है और उन्हें पाश में जकड़ लेता है तो उसकी मृत्यु निश्चित ही है।

पहले जीवड़ो चेत्या नाही अब ऊंडी पड़ी पहारूं।
जीव र पिंड बिछोड़ो होयसी, ता दिन थाक रहे सिर मारूं।

समय रहते हुए यह जीव सचेत नहीं हुआ और अब समय व्यतीत हो चुका है, वापिस वही समय बहुत दूर चला गया है। बीता हुआ समय वापिस लौट कर नहीं आयेगा। इस वृद्धावस्था में शरीर रक्षा के अनेकों उपाय करने पर भी इस जीव और शरीर का अलगाव तो निश्चित होगा। उन दिनों जब मृत्यु आयेगी तो सभी उपायों से थक कर सिर कूट कर के ही रह जायेगा। कोई भी रक्षा का उपाय नहीं जुटा पायेगा। एक मूल रूप विष्णु परमात्मा ही अन्तिम समय में रक्षक है। इसलिये वन्दनीय, पूजनीय है।

प्रिय पाठको,

जून, 2011 के अंक में हमने आपको सूचित किया था कि अगस्त-सितम्बर, 2011 का संयुक्त अंक 'जन्माष्टी विशेषांक' के रूप में प्रकाशित किया जायेगा इसलिए अगस्त का अंक प्रकाशित नहीं होगा। इस सूचना के अनुसार जुलाई का अंक आपके पास पहुंचना चाहिए था। परन्तु आपको विदित ही है कि 3 जून, 2011 को अचानक 'बिश्नोई रत्न' चौ. भजनलाल जी का दु:खद निधन हो गया। 5 जून, 2011 को बिश्नोई सभा, हिसार की बैठक में निर्णय लिया गया कि आगामी अंक 'चौ. भजनलाल स्मृति अंक' के रूप में प्रकाशित किया जायेगा। परन्तु सामग्री संकलन में अधिक समय लगने के कारण यह स्मृति अंक 22 अगस्त, 2011 को प्रकाशित हो पाया। इस दौरान आपके हजारों की संख्या में फोन आये, जिससे पता चलता है कि आपने कितनी बेसब्री से दो मास तक 'अमर-ज्योति' का इंतजार किया। निश्चित ही आपको असुविधा हुई है जिसके लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं। आपकी उत्सुकता को देखते हुए 'जुलाई-अगस्त' के संयुक्त अंक 'चौ. भजनलाल स्मृति अंक' को हमने 24 अगस्त को ही प्रेषित कर दिया। आशा है आपको यह अंक मिल गया होगा और रूचिकर भी लगा होगा। इस विषय में आप हमें अवश्य लिखकर भेजें। यदि आपको यह अंक नहीं मिला है तो सम्बंधित डाकघर से पता करें। आपसे अनुरोध है कि समय-समय पर प्रतिक्रिया भेजकर हमारा मार्गदर्शन करते रहें।

- सम्पादक

जांभाणी संस्कृति में संस्कारों की एक अनूठी परम्परा

जांभाणी से मेरा तात्पर्य है भगवान श्री जांभोजी की परम्परा में जो कुछ हमें देखने-सुनने, जानने व सीखने को मिल रहा है, उसी का नाम है 'जांभाणी'। 'जंभपति नांभमति पापानि वा जम्भ:' अर्थात् मानव हृदय में रहने वाली आसुकी वृत्ति (पाप) को नष्ट करने वाली जो शक्ति है, उस शक्ति का जो स्वामी है, वो है जम्भेश्वर।

'संस्कृति' शब्द संस्कृत भाषा का है। संस्कृत व्याकरणानुसार इस शब्द की व्युत्पत्ति 'सम्' उपसर्ग-पूर्वक 'कृ' धातु से भूषण अर्थ में 'सुट्' 'भागम पूर्वक' 'क्तिन्' प्रत्यय करने पर 'संस्कृति' शब्द की निष्पत्ति होती है। जिसका अर्थ है - इहलौकिक, पारलौकिक, धार्मिक, आध्यात्मिक, आर्थिक, अभ्युदय के उपयुक्त मानव द्वारा किये जाने वाले कार्य, जिससे उसे लोग अलंकृत और सुसज्जित समझें, उन कर्मों का नाम है - ''संस्कृति''।

यदि इसी बात को प्रकारान्तर से कहूं तो संस्कृति शब्द का शुद्ध अर्थ है धर्म अर्थात् वो कर्म या नियम जिनकी पालना करने से इस लोक और परलोक दोनों में जीवन का अभ्युदय हो, भला हो, कल्याण हो, उसी का नाम है धर्म और वो नियम है भगवान श्री जाम्भो के द्वारा प्रतिपादित उन्नतीस नियम। जिनमें परमात्मा के द्वारा विरचित जड़ चेतन दोनों प्रकार की सृष्टि के लिए मंगल कामना की गयी है।

संस्कृति शब्द का दूसरा वाचक शब्द है, 'संस्कार, संस्कार और संस्कृति' शब्द की निष्पत्ति में भेद मात्र प्रत्यय का है। संस्कृति में 'क्तिन्' प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है और संस्कार में 'घञ्' प्रत्यय का, दोनों शब्द एक ही अर्थ के वाचक है। धर्म की पालना करने से मानव, मानव है, अन्यथा मानव और पशु में भेद ही क्या रह जाता है। खाना-पीना, सोना, संतानोत्पत्ति आदि क्रियाएं इन्सान और पशु में एक समान देखने को मिलती है। भेद केवल यही है कि इन्सान उक्त सभी कार्य संस्कार के रूप में करता है और पशुओं में यह संस्कार देखने को नहीं मिलता। खेत में खड़े अनाज को पशु खा जाते हैं, लेकिन इन्सान खेतों में खड़े अनाज को खाने को तैयार नहीं होता है। यह संस्कारों का ही प्रभाव है। आश्वलायन ने तो यहां तक कह दिया है कि 'संस्कार रहिता ये तू नेषां जन्म निरर्थकम्' संस्कारों के द्वारा ही मानव में मानवता आती है बिना संस्कारों के मानव में मानवता आ नहीं सकती।

'संस्कार क्या है? इसे केवल बाहरी धार्मिक आडम्बर समझना भूल है। इसमें बाहरी कृत्य अवश्य है, किन्तु ये आन्तरिक आध्यात्मिक-सौन्दर्य के बाह्यदृष्ट रूप है और इसमें संस्कृति की महत्ता है। आध्यात्मिक जीवन से विच्छेद होने पर ये मृत अस्थि पंजर के समान है, जिसमें गति और जीवन नहीं है।

जांभाणी परम्परा में प्रत्येक कर्म का सम्बन्ध संस्कार और संस्कृति से जुड़ा है। जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त और प्रात:काल उठने से लेकर सायंकाल सोने पर्यन्त जितने भी कार्य एवं क्रिया कलाप है वो सब-संस्कार एवं शास्त्रीय पद्धति पर आधारित है। मानव को कर्त्तव्य अकर्त्तव्य का ज्ञान भी शास्त्रों द्वारा ही होता है। शास्त्र विहित कर्तव्य कर्म और निषिद्ध कर्म को जानकर उसका आचरण करना ही संस्कृति है।

मानव जीवन को आत्मिक दृष्टि से देखा जाये तो आत्मा ईश्वर का अंश है :'ममैवांशो जीवलोके जीवभूत: सनातन:' (गीता-15/7) और यह शरीर साधन है। साधन-साध्य की प्राप्ति हेतु मिला है। ऐसी स्थिति में आत्मा के इस अपसारण करने के लिये अपेक्षित संस्कारों की नितान्तावश्यकता है।'

'जिन जीवन की विध जाणी'

(शब्दवाणी120/98/12-13)

इस कर्म को स्वयं ही करना है, स्वयं ही अपने उद्धार में प्रवृत होना पड़ेगा।

'उन मुन मनवा, जीवन जतन कर (वही-120/70/10)

'जीव कै काजै खड़ोज खेती' (वही-122/70/5-6)

इस अत्यन्त दुर्लभ मानव शरीर को पाकर भी आत्मकल्याण नहीं कर सके तो निश्चित ही आत्माहन की गति प्राप्त होगी-

नृदेह माद्यं सुलभं सुदुर्लभं प्लवं सुकल्पं गुरु कर्णधारम्।
मयानुकूलं नमस्वतेरितं पुमान् भवाब्धिं न वरेत स आत्महा॥

(श्रीमद्भागवद-11/20/17)

अर्थात् यह मानव तन समस्त शुभ कर्म फलों की प्राप्ति का मूल है और अत्यन्त दुर्लभ होने पर भी अनायास सुलभ हो गया है। इस संसार-सागर से पार जाने के लिये एक सुदृढ़ नौका है। शरण-ग्रहण करने मात्र से ही गुरुदेव

इसके खेवट बनकर पतवार का संचालन करने लगते है और कहते है स्मरण मात्र से ही मैं अनुकूल वायु के रूप में इसे लक्ष्य की ओर बढ़ाने लगता हूँ-

'गुरु मुख पवन उड़ाइये'

(शब्दवाणी-120/30/24)

इतनी सुविधा होने पर भी जो इस शरीर के द्वारा संसार-सागर से पार नहीं हो जाता वह तो अपने हाथों अपने आत्मा का हनन-वध-पतन कर रहा है।

उपर्युक्त बातों को मध्य नजर रखते हुए जांभाणी संस्कार-परम्परा में जीवन का एक ध्येय निश्चित किया गया है कि युक्ति पूर्वक जीवन जीते मुक्ति को पाना' और उस तक पहुंचने के लिये अनेक साधनों का आविष्कार भी, उसी आधार पर जीवन की सामग्रियों को दो भागों में बांटा है। एक तो वह जिसको लेकर मनुष्य उत्पन्न होता है, दूसरा वह जिसका संचय वह अपने वर्तमान जीवन में परिस्थितियों के अनुकूल करता है। शास्त्रकारों का मत है कि नवजात-शिशु का मस्तिष्क कोरी पट्टी के समान नहीं है जिस पर बिल्कुल नया लेख लिखना है। इसके विरुद्ध इस पर उसके अनेक पूर्व जन्मों के संस्कार अंकित है। साथ-ही-साथ उनका यह विश्वास भी है कि नवीन संस्कारों द्वारा पुराने संस्कारों को प्रभावित, उनमें परिवर्तन और उनका उन्मूलन भी किया जा सकता है। प्रतिकूल संस्कारों का विनाश और अनुकूल संस्कारों का निर्माण ही साधक का प्रयास है।

चरक संहिता में ठीक ऐसा ही उल्लेख करते हुए कहा गया कि :- **'संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते'**

(चरक-संहिता-विमान 01/27)

दुर्गुणों, दोषों का परिहार तथा गुणों का परिवर्तन करके भिन्न एवं नये गुणों का आधान करने का नाम संस्कार है। विकारों एवं अशुद्धियों का निवारण करना तथा मूल्यवान गुणों को सम्प्रेषित अथवा संक्रमित करना संस्कारों का कार्य है।

मनुस्मृत्यानुसार संस्कारों का मूलोद्देश्य तीन रूपों में परिलक्षित होता है। (1) दोषायनपन (2) अतिशयाधान (3) हीनाङ्गपूर्ति। अपने जीवन में जो दोष है उनको दूर करना दोषापनयन कहलाता है। जो गुण नहीं है उनको लाना-अतिशयाधान कहलाता है। जीवन में जिस चीज की कमी है उसको पूरा करना हीनाङ्गपूर्ति कहलाती है।

इस तरह से विधि पूर्वक सम्पन्न किये गये संस्कारों से संस्कृत व्यक्ति परमतत्त्व को या परमानंद को प्राप्त करता है, जैसे कि अनेक रंगो से विधि पूर्वक सुसज्जित चित्र आह्लाद को देने में समर्थ होता है :-

चित्रकर्म यथाऽनकैरङ्गरून्मील्यते शनेः।
ब्राह्मण्यमपि तद्वल्स्यात्संस्कारै विधि पूर्व कैः॥

(आङ्गिरसस्मृति-द्वितीय-4/10)

जिस तरह अन्न कपास आदि उत्पत्तिस्थान के दोष अपने साथ लाते है। ठीक उसी तरह मनुष्य भी अपनी उत्पादक सामग्री या उत्पत्तिस्थान के दोषों से अत्यन्त दूषित रहता है। उन दोषों को हटाना पहले आवश्यक है। उसी के लिये जन्म क्या, गर्भ में आते ही उन संस्कारों का प्रभाव आरम्भ हो जाता है। अतः स्मृतिकारों ने स्पष्ट किया कि संस्कार के द्वारा बीजगत और गर्भगत दोषों का निवारण किया जा सकता है:-

'बैजिकं गार्भिकं चैनो द्विजानामपमृज्यते'

(मनुस्मृति-2/27)

संस्कारों का विस्तृत विवेचन धर्मशास्त्रों पृथक्-पृथक् मिलता है। लेकिन षोड्स संस्कार सर्वमान्य माने गये है। उनमें भी वैष्णव धर्मशास्त्रों (3026) के अनुसार दस संस्कारों का उल्लेख मिलता है।

उपर्युक्त संस्कारों में जांभाणी परम्परा में मुख्य रूप से चार प्रकार के संस्कारों को स्वीकारा गया है। सूतक का संस्कार, सुगरा करण संस्कार, वैवाहिक- संस्कार, अंत्येष्टिका-संस्कार, लेकिन सोलह में से जातकर्म, नामकरण, कर्णवेध, चूडाकरण, उपनयन, अन्न प्रसाधनादि संस्कार देखने को मिलते है। पूर्ण जानकारी के अभाव में संस्कारों की श्रेणी में नहीं रखा गया है।

भगवान श्री जांभोजी ने सर्वप्रथम मजबूत नींव रखी 'तीस दिन सूतक' यदि यह संस्कार समय पर, पद्धति से, योग्य संस्कार कर्त्ता के द्वारा सम्पन्न होता है, तो गुरु महाराज की वाणी चरितार्थ होती नजर आयेगी। 'लोहा हूंता कंचन घड़ियों। घड़ियों ठाम सुठाऊं' मानव समाज का अलंकरण तैयार होकर एक बिश्नोई सामने आयेगा। योग्य संत अथवा आचारवान बिश्नोई का बेटा यह संस्कार कर सकता है। ध्यान देना होगा आपको, न आपको तिथि देखनी है, न वार न त्यौहार, न उन्नतीस हों और न इकतीस, ठीक तीसवें दिन ही यह संस्कार होना चाहिये। ध्यान दें नालछेदन से पूर्व सूतक नहीं लगता है, उस समय शहद में डूबोकर चाँदी या सोने की श्लाका से नवजात शिशु की जिह्वा पर 'ॐ' लिखें, जिससे आपका बालक मेधावी होगा। संस्कार-कर्त्ता पूर्ण सावधानी के साथ बालक मंत्र के साथ तीन-तीन बार

पाहल देते हुए इसी मंत्र के साथ पाहल पिलाएं, बालक की माता को पहले यह समझा देना चाहिये जिससे वो सावधानी रख सके।

सुगरा-करण संस्कार: वैदिक एवं जांभाणी परम्परानुसार जब आपकी संतान दस वर्ष आयु पार कर जाये 10 से 17 वर्ष की आयु मध्ये हर परिस्थिति में जांभाणी संत, जो जानकार हो, योग्य हो, उनके द्वारा उचित समय पर यह संस्कार करवायें। शास्त्रीय मर्यादानुसार यह दूसरा जन्म माना जाता है। हिन्दू संस्कृति में दो परम्पराएं सनातन से चली आ रही हैं। एक बिन्द-परम्परा और दूसरी नाद परम्परा। इसमें नित्य का सम्बन्ध नित्य के साथ है और अनित्य का अनित्य के साथ। गुरु और शिष्य का सम्बन्ध आत्मा का सम्बन्ध है जो इस शरीर के रहते और न रहने पर भी शाश्वत रूप से रहता है। अत: समय पर किया गया संस्कार पूर्ण लाभदायक होता है।

विवाह-संस्कार: विवाह-गृहस्थाश्रमका सर्वप्रमुख संस्कार है। इस संस्कार के प्रमुख तीन उद्देश्य होते हैं-अनर्गल प्रवृत्ति का विरोध, पुत्रोत्पादन द्वारा वंश की रक्षा, भागवद्मेम का अभ्यास।

मनुस्मृत्यानुसार आठ प्रकार के विवाह कहे गये है-ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस और पिशाच। जिसमें योग्य वर और वधु अर्थात गृहस्थ बनने के लिये मन के अनुरूप, भिन्नगोत्रीय, अपने से अल्पवयस्का कन्या का पाणिग्रहण करें।

देश-काल भेद से सभी जातियों में वैवाहिक विधियों में असमानता दिखायी पड़ती है। किन्तु वैदिक जांभाणी परम्परायें विवाह गुरुदेव अग्नि का आशीर्वाद प्राप्त कर उनकी प्रदक्षिणा करके शाखोचार, प्रतिज्ञा, सूर्य ध्रुवदर्शन एवं सिन्दूर-दान-सदृश अतिविशिष्ट वैदिक विधियों द्वारा जीवन पर्यन्त अटूट बन्धन के रुप में सम्पन्न होते हैं। लेकिन दुर्भाग्य से आसुर-विवाह प्रथा भी चल पड़ी है। जिस विवाह में क्रय-विक्रय (धन लेना या देना) होता है उसे मनुस्मृति में आसुर विवाह कहा है। दहेज प्रथा इसी का विकृत रूप है।

अन्त्येष्टि क्रिया:- यह जीवन का अंतिम संस्कार है जिसे पितृमेध, अन्तकर्म, अन्त्येष्टि अथवा श्मशान कर्म आदि नामों से भी कहा गया है। जांभाणी परम्परा और प्राचीन वैदिक परम्परा में थोड़ा अन्तर अवश्य है। मरणासन्नावस्था में किये जाने वाले कार्यों का निरूपण करते हुए कहा गया है कि गोबर जल से भूमि को लीपकर, कुशाओं से ढक दे और काले तिलों को फैला दें। उस भूमि पर मरने वालों को उत्तर की ओर सिर करके सीधा- चित-करके लिटा दें। तुलसी पत्र सहित गंगाजल धीरे-धीरे मुख में डाले। उपस्थित सभी लोगों को हरि-कीर्तन करना चाहिये। इस मृत व्यक्ति के शरीर को स्नान कराकर, वस्त्रों से आच्छादित कर चिता में स्थापित करना चाहिये। लेकिन जांभाणी परम्परा में भूमि दाग दिया जाता है। वैदिक परम्परा में इस संस्कार का विधान मात्र संन्यासियों के लिये किया गया है। सन्यासियों का जो संस्कार पचहत्तर वर्ष की अवस्था में किया जाता है। वह बिश्नोई के घर में जन्म लेने वाले बालक का प्रथम संस्कार किया जाता है। जिससे उसका जीवन तपस्वी का जीवन जीया जाता है क्योंकि नानु-बन्धी कर्मों को तथा कृतकर्म-फलों को त्यागने से और श्रीभगवद् चरणानुरागी होने से प्रभु चरणों में गाढ़ अनुराग होने से गृहस्थ जीवन जीते हुए भी परिवार से अनासक्त जीवन जीता है। अतएव शरीर से निकली हुई बिश्नोइयों की आत्मा शीघ्रातिशीघ्र शुक्ल गति से प्रायण कर जाती है। मृत शरीर की ओर आकर्षण करने वाली सामग्री ही नहीं रह जाती। इसलिये बिश्नोइयों के लिये श्राद्ध आदि की कल्पनाएं नहीं की गयी है। हिन्दुओं में छोटे बालकों का शरीर नहीं जलाया जाता। उसे भूमि में गाड़ दिया जाता है। बिश्नोई समाज के अतिरिक्त हिन्दुओं में तीसरे दिन अस्थिसंचन करते हैं। जबकि बिश्नोई समाज में मात्र तीन दिन का पातक माना गया है। तीसरे दिन यज्ञ-पाहल से पवित्रिकरण क्रिया सम्पन्न हो जाती है। जो जितना पवित्र होता है उसके लिये पातक की अवधि उतनी ही कम होती है। बिश्नोई का जीवन गृहस्थाश्रम में रहकर भी एक तपस्वी का जीवन है। नित्य-नैमित्तिक क्रियाओं का निर्वहन, आजीवन शास्त्रीय पद्धति पर आधारित जीवन जीता है। अत: इसी पवित्रता का ही प्रभाव है, मात्र तीन दिन में शुद्धि हो जाती है।

प्रत्येक संस्कार की सम्यकतया पालना यदि जीवन में होती है तो युक्ति साथ मुक्ति सुनिश्चित है। यही जांभाणी परम्परा में संस्कारों की एक अनूठी परम्परा रही है।

आचार्य संत डॉ. गोवर्धनराम शिक्षा शास्त्री
व्याकरणाचार्य, साहित्यरत्न, एम.ए.
'गोल्ड-मेडलिस्ट' (पीएच. डी.)
हरिद्वार-249404 (उत्तराखण्ड)

बिश्नोई समाज के गौरव थे, स्व. मनीराम जी बिश्नोई

पुण्य तिथि (24 अगस्त) के अवसर पर

महान शख्सियत उन लोगों को नसीब होती है जो कुछ करने की तलब दिल में रखते हैं, जो अपनी निजी इच्छाएं एवं स्वार्थ की भावना को जमीन में दफन करके त्याग और बलिदान की सत्यता की कसौटी पर खरे उतर कर संसार से विदा होते हैं। धन्य हैं वे लोग जो इस नश्वर संसार को मिथ्या समझ कर अपने कार्य कलापों एवं आचरण से अन्यों के लिए उजाला पैदा करते हैं।

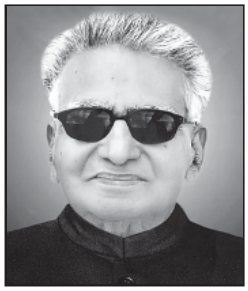

इसी परम्परा में बिश्नोई समाज में पैदा एक शख्सियत स्व. मनीराम जी बिश्नोई थे, जिन्हें हम अमर ज्योति पत्रिका के माध्यम से बखूबी जानते और पहचानते आ रहे हैं। स्व. मनीराम जी उन बिश्नोई भाइयों के भाई थे, जिन्होंने क्रूर एवं निर्दयी, शिकारी से हिरण को बचाने के लिए अपने सीने में गोली खाई वह उस बिश्नोई समाज से संबन्धित थे जिस मसाज की एक मां ने घायल हिरणी के बच्चे को अपने स्तन से दूध पिला कर बड़ा किया था। धन्य हैं, बिश्नोई समाज की उन माताओं को, जिन्होंने समस्त संसार में एक मिसाल कायम की है। स्व. मनीराम जी एक ऐसे रहमदिल इंसान थे कि अक्सर मुझे फोन पर फरमाते थे 'कुरैशी जी, इन दिनों इधर, (हरियाणा में) हिरण के शिकारी अपनी हरकतों से बाज नहीं आते हैं, आप कोई ऐसा शानदार दर्द भरा आलेख 'अमर ज्योति' के लिए लिखे, जिससे शिकारियों का मुंह काला होता रहे और मेरी कौम सतर्क रहे। सच मानिए, हाजी-साहब मैं तो ऐसा महसूस करता हूं कि गोली हिरण के नहीं लगी मेरे सीने में गोली लगी है। ऐसे संवेदनशील इंसान थे, हमारे युग पुरुष स्व. बिश्नोई साहब। हिरण के शिकार के संबंध में बिश्नोई साहब के आलेख उन द्वारा सम्पादित अमर ज्योति में सैंकड़ों प्रकाशित हुए, जिससे शिकारियों के हौसले पस्त हुए। बिश्नोई समाज में 29 नियमों की अनुपालना अनिवार्य है। परन्तु हरे वृक्षों की रक्षा और खूबसूरत हिरण जो जंगल की जीनत हैं, की जान देकर भी हिफाजत की जाती है।

यह सत्य है कि स्व. मनीराम जी वकील, स्वयं मूर्धन्य विद्वान् और एक मंजे हुए लेखक थे। जाम्भाणी साहित्य में उनकी विशेष रूचि एवं पैठ थी, जो जीवन पर्यन्त उनकी कलम की आधारभूत मुख्य कर्मभूमि रही। जाम्भाणी की तशरीह (व्याख्या) भी की और अमर ज्योति के माध्यम से बिश्नोई समाज के घर-घर तक भी पहुंचाई। वर्तमान भारतीय समाज में मानवीय मूल्यों एवं संवेदना के गिरते स्तर को देखकर वह अपने जीवन काल में अत्याधिक चिंतनशील रहते थे। आध्यात्मिक चिंतन का सुसंस्कार उन्हें अपने पूर्वजों से विरासत के रूप में मिला जिसका चिंतन एवं सृजन वह बचपन से जीवन पर्यन्त सफलतापूर्वक करते रहे।

आज के मौजूदा माहौल में बिश्नोई समाज के प्रति स्व. मनीराम जी के हृदय में अमर वीरांगना 'अमृता जी' की भांति एक जुनून जुम्बिश एवं तड़प थी, उनके दिल में यह समाया हुआ था कि अपना बिश्नोई समाज 21वीं सदी में अपनी पहचान कैसे बनाए रखें। अपनी कौम के लिए उनकी जिन्दगी समर्पित थी। वह मानवीय करूणा के मसीहा थे, मैंने उनके चेहरे पर कभी गुस्सा नहीं देखा। शायद शायर की इन्हीं पंक्तियों बारे उनके दिल में खौफ था- **तैश में खौफे खुदा कर, ऐश में यादे खुदा कर।**

इन महाशय ने जीवन भर इन पंक्तियों की पालना की। अपनी जिन्दगी में अपना मयार और वकार कायम रखा। इस जहीफुल उम्र में भी दानिशमन्दाना ख्यालात के जाज्वल्यमान सितारे थे और उस बुजुर्ग के आलम में समुन्द्र जैसा विशाल हृदय था। रब की रजा में राजी थे, दुर्देश की मानिन्द, सूफियाना तरीकत से वह संत प्रवृत्ति के थे।

वह जीवन में शिक्षा के महत्त्व को बखूबी समझते थे और बालिका शिक्षा के घोर हिमायती थे। बिश्नोई

समाज में गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वालों को सरस्वती वंदना यानि ज्ञान की रोशनी बारे प्रेरणा देकर ज्ञान से ईश्वर को पहचान करने का रास्ता हमवार किया ताकि उनकी कौम मशक्कत के साथ इस स्पर्धा के जमाने में दूसरी कौमों से आगे निकल सके। बिश्नोई साहब का कई बड़ी-बड़ी संस्थाओं से सम्बन्ध था। अत: गरीब बच्चों को स्वयं आर्थिक मदद करने के साथ-साथ, अन्य संस्थाओं से वजीफे भी दिलाए। ये महाशय जीवन भर सत्यता एवं अनुशासन पर अटल रहे, इंसाफ पसंद थे और ताउम्र सच्चाई के पक्षधर रहे। वे बार एसोसिएशन के सीनियर एवं काबिल वकील थे, परन्तु झूठे मुकद्दमों से उन्हें नफरत थी।

बिश्नोई साहब जिस कार्य को हाथ में लेते, चाहे सरल हो या कठिन उसे पूर्ण करके ही छोड़ना उनकी आदत में शुमार था जो हम सबके लिए अनुकरणीय है। मेरा उनसे अमर ज्योति के माध्यम से वर्ष 1953 से आंतरिक सम्बन्ध बना जो कालांतर में निजी पत्रों के माध्यम से घनिष्ठ मित्रता में बदल गया। उनके पत्राचार में अपने आत्मीय मित्रों एवं स्वजनों के लिए एक अपनत्व की झलक मिलती थी जो दूसरे इन्सानों में असंभव थी।

मेरी बुजुर्ग सोसायटी का एक ऐतिहासिक पुरुष अब इस दुनिया में नहीं रहा। मेरी शेष जिंदगी में इस जगह की कोई भरपाई नहीं कर सकता। अब सिर्फ उनकी मधुर यादगार रह गई है। गुजर जाने के बाद इंसान की बड़ी कद्र होती है, मेरी नजर में वह एक आलमगीर इंसान थे। हम दोनों के मध्य जमीन का फासला 500 किलोमीटर था, परन्तु दिल से नहीं। उनकी महान मित्रता का रहस्य यह था कि हमारे तन दो थे मगर मन एक था। हमारी आपसी मुलाकात जीवन में केवल एक बार (1998) उनके मेरे आवास पधारने पर हुई थी, परन्तु वह महाशय मन के सच्चे इंसानियत पसंद और मित्रों के कद्रदान थे जो मुझे ताउम्र याद आते रहेंगे।

मैं उनकी प्रथम पुण्यतिथि 24 अगस्त 2011 पर श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं, नमन करता हूं, खुदा उन्हें जन्नत में उच्च स्थान प्रदान करे। उनके वारिसों को सब्र करने की तरगीब करता हूं। इस आलेख को लिखते समय मुझे खून के आंसू आते हैं। उनका परम मित्र होने के नाते, खुदा मुझे भी सब्र अता फरमाएगा। अब मैं सिर्फ इतना ही कहना चाहूंगा कि स्वर्गीय मनीराम जी ने जो अपनी कौम को एक पैगाम दिया था आज उस पर अमल करने की जरूरत है। उनके लिए यह लफ्ज की काफी है-

मिटा दे अपनी हस्ती को, अगर कुछ मरतबा चाहे।
कि दाना खाक में मिल कर गुल गुलजार होता है।

एम. युनूस कुरैशी
पर्यावरण एवं वन्य जीव प्रेमी
अनिस-मंजिल, निमाज, जिला पाली (राज.)
मो.: 9784930776

अमर ज्योति के पूर्व सम्पादक स्व. मनीराम बिश्नोई एडवोकेट की प्रथम पुण्य तिथि (24 अगस्त) पर उनके सुपुत्र श्री अशोक कुमार बिश्नोई, **K1F1V1/** अतिरिक्त उपायुक्त पानीपत ने 5100 रुपये की राशि अमर ज्योति को दान स्वरूप दी है। अमर ज्योति पत्रिका परिवार की ओर से श्री अशोक बिश्नोई का हार्दिक धन्यवाद तथा गुरु जम्भेश्वर भगवान से प्रार्थना कि आप अपने पिताश्री के पद चिह्नों पर चलते हुए समाज सेवा करते रहें।

बिश्नोई सभा सिरसा का 37वां स्थापना दिवस 13 सितम्बर, 2011 को बिश्नोई धर्मशाला सिरसा में मनाया जायेगा। 8 सितम्बर से साप्ताहिक हरि कथा का आयोजन किया जायेगा। जिसमें संत डॉ. गोवर्धनराम आचार्य हरि चरित्र का गुणगान करेंगे। इस अवसर पर आप सादर आमंत्रित हैं।

ओ.पी. बिश्नोई
मंत्री, बिश्नोई सभा, हिसार

बाल कहानी

रामू और म्याऊं

प्रस्तुत कहानी 61 वर्ष पहले 'अमर ज्योति' के अगस्त, 1950 के अंक में प्रकाशित हुई थी। इस कहानी के लेखक स्व. मनीराम बिश्नोई एडवोकेट 'अमर ज्योति' के संस्थापकों में से एक थे। आपने 1950 से 1954 तक अमर ज्योति के अवैतनिक व्यवस्थापक के रूप में सेवा की थी तथा बाद में आप 'अमर ज्योति' के यशस्वी संपादक भी रहे। स्व. एडवोकेट साहब एक समर्पित समाज सेवी व जांभाणी साहित्य के गूढ़ ज्ञाता थे। 24 अगस्त उनकी पुण्य तिथि है। उन्हीं की प्रतिस्मृति में यह कहानी प्रस्तुत है।

(सम्पादक)

एक चालाक बिल्ली बड़ी निर्दयी थी। उसका ध्यान हर वक्त किसी दुर्बल चिड़िया या चूहे को हड़प करने में लगा रहता था।

एक दिन कहीं जाते हुए उसकी आंखें शिकार की खोज में थी कि कहीं कोई चुहिया या मुर्गी का बच्चा दिखाई दे जाए तो उसे पंजों तले दबाकर कुछ देर मनोरंजन किया जाए।

रास्ते में कांटे पड़े हुए थे कि अचानक बिल्ली का अगला पंजा उन पर पड़ा। पंजे का पड़ना था कि एक कांटा बिल्ली के चुभ गया। बिल्ली ने उसे निकालने की बहुत कोशिश की लेकिन वह न निकला। अंत में बिल्ली परेशान होकर लंगड़ाती हुई वहां से चल दी।

अभी वह थोड़ी ही दूर चली थी कि उसे एक मुर्गी दिखलाई दी जो अपने बच्चों के साथ दाने चुग रही थी। इन्हें देखकर बिल्ली जोर से बोली- बहिन मुर्गी! मेरे पंजे में कांटा लगा हुआ है। यदि आप अपनी तेज चोंच से निकाल देंगी तो आपकी बड़ी मेहरबानी होगी। बिल्ली की बात की ओर ध्यान न देते हुए बुढ़ी मुर्गी तो दाना चुगने में लगी रही। मगर मियां कुक्कड़ साहिब से न रहा गया और गुस्से से पंजों पर खड़े होकर कांपती आवाज से कहा खालाजान यह चालाकी किसी और को दिखाना। मैं इन कंजी आंखों पर भरोसा नहीं कर सकता। बिल्ली बिचारी क्या करती? पैर से विवश थी। अपना सा मुंह लेकर लंगड़ाती हुई चल दी। थोड़ी ही दूर चली होगी कि उसकी निगाह बीबी बत्तख पर पड़ी जो अपने छोटे-छोटे बच्चों के साथ तालाब के किनारे पर फिर रही थी। इन्हें देखकर बिल्ली ने ऊंचे स्वर में कहा- बीबी बत्तख जरा मेरी भी सुनो।

बिल्ली की आवाज सुनकर बत्तख ने ताना देते हुए कहा- मौसी तुमने भी कभी किसी पर दया की है जो आज हमसे दया चाहती हो? इतना कहकर बत्तख अपने मुन्नों को लेकर जल में उतर कर तैरने लग गई।

बिल्ली गुस्से से आग बबूला हो उठी मगर अपनी लाचारी का ख्याल आते ही रोने लगी और रोते-रोते उसे महसूस होने लगा कि मैंने दया करना नहीं सीखा तो मेरे ऊपर कौन दया करेगा? इस ख्याल के आते ही बिल्ली का धीरज और भी जाता रहा और उसकी आंखों से टप-टप आंसू गिरने लगे।

इस तरह बिल्ली को रोते-रोते दिन छिप गया। दिन छिपे पानी पीने के लिए उधर एक गाय आई। बिल्ली को रोते देखकर गाय से नहीं रहा गया और उसका दिल दया से गद्‌गद् हो गया। गाय ने प्यार भरे मीठे शब्दों में उसके रोने का कारण पूछा। गाय की सहानुभूति पाकर बिल्ली का दिल और भी भर आया। उसने रोते हुए अपनी दु:खभरी कहानी गाय को सुनाई।

बिल्ली की दर्दभरी कहानी सुनकर गाय का हृदय दया से भर गया। वह बहुत सोच विचार कर बोली बहन मुझे दु:ख है कि मैं तुम्हारा कांटा नहीं निकाल सकती क्योंकि कांटा निकालने के लिए ईश्वर ने न तो मुझे नुकीली चोंच दी है और न ही नाखून दिया है। पर हां, मैं तुम्हें हमेशा दोनों समय दूध पिला जाया करूंगी।

उस दिन से गाय हमेशा बिल्ली के पास आती और बिल्ली उसके थनों को मुंह लगा कर पेट भर दूध पी लेती फिर दिन भर अपनी मजबूरी पर टप-टप

आंसू बहाती।

एक दिन रामू उधर आ रहा था। वह बिल्ली को रोते देख उसके पास गया। बिल्ली का पंजा देखकर उसके रोने का मतलब समझ गया। रामू को बिल्ली पर दया आ गई। वह उसे उठा कर अपने घर ले आया। घर पर सरोज ने जब बिल्ली को देखा तो वह रामू से बोली भैया इस दुष्ट म्याऊं को क्यों ले आए। यह मेरी भोली कोयल को खा जाएगी। दूध जूठा करेगी।

सरोज की बात सुन कर रामू ने हंस कर कहा सरोज तू अभी पगली है। तू नहीं जानती दया करने से दुष्ट भी भले बन जाते हैं। यह कह कर रामूं ने पानी गर्म किया और पंजा धोकर पुलटिस बांध दी। रामू की सेवा से बिल्ली कुछ ही दिनों में ठीक हो गई।

अब बिल्ली रामू के पास रहती है। सब पर दया करती है, कबूतर भी उससे नहीं डरते। मुर्गी और बत्तख के बच्चे और सरोज की कोयल दिन भर उसके साथ खेलते हैं। म्याऊं में इस प्रकार सुधार देखकर सब कहते हैं- 'वास्तव में सुधार घृणा से नहीं, दया से होता है।' अत: दया रूपी शस्त्र को सदैव धारण करो।

मनीराम गोदारा
आदमपुर, हिसार

अपील

श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान की अनुकम्पा से '**श्री जम्भेश्वर भगवान के जीवन चरित्र**' पर एक लघु फिल्म बनाने का प्रयास जारी है, इस फिल्म में काम करने वाले इच्छुक युवक-युवतियां अपने पूर्ण परिचय (पता, फोन नं. सहित) दो फोटो के साथ हमें निम्न पते पर भेजने की कृपा करें, आपके सुझाव भी आमंत्रित हैं। इस फिल्म की शूटिंग आठों धामों के साथ-साथ हरियाणा, राजस्थान, उत्तर प्रदेश के महत्वपूर्ण स्थानों पर की जाएगी।

सम्पर्क सूत्र - **अशोक बिश्नोई**
डी-12, अवन्तिका कालोनी, एम.डी.ए.,
मुरादाबाद (उ.प्र.)

कलियुग में विष्णु अवतार हो तुम

जम्भेश्वर, गुरु जम्भेश्वर, अज्ञान से उबार दो,
उतारे तुम्हारी आरती, गुरु हमें अभिज्ञान दो।
बुराई दूर कर भलाई का, गुरु हमें वरदान दो,
जम्भेश्वर गुरु जम्भेश्वर, अज्ञान से उबार दो।

कलियुग में विष्णु भगवान के अवतार हो तुम,
ज्ञान के भण्डार हो तुम, प्रेम के आधार हो तुम।
हम कर रहे तुम्हारी वन्दना, कृष्णमुरार हो तुम,
जम्भेश्वर, गुरु जम्भेश्वर, अज्ञान से उबार दो।

सब्दवाणी का प्रचार हो, नियमों का प्रसार हो,
मन पावन हो हमारा, तुम्हारी जय जयकार हो।
गुरु जम्भेश्वर, गुरु जम्भेश्वर, उत्तम संस्कार हो,
जम्भेश्वर, गुरु जम्भेश्वर, अज्ञान से उबार दो।

कल्याणकारी हो तुम, करूणा के सागर हो तुम,
जगरक्षक हो तुम, जग के पालनहार हो तुम।
जम्भेश्वर भगवान, हमे भवसागर तार दो,
जम्भेश्वर, गुरु जम्भेश्वर, अज्ञान से उबार दो।

गुरु तुम्हारे गुण गायें सदा, हमें मिले सुख सम्पदा,
''सुधाकर'' की है बस यही कामना, आशीर्वाद मिले सदा।
जम्भेश्वर, गुरु जम्भेश्वर, हमें सत्य का संसार दो,
जम्भेश्वर, गुरु जम्भेश्वर, अज्ञान से उबार दो।

ओ.पी. बिश्नोई 'सुधाकर'
प्रधान, अ.भा. जीव रक्षा बिश्नोई सभा, दिल्ली

सूचना

पाठकों से सूचित किया जाता है कि आपकी मांग को ध्यान में रखते हुए 'चौ. भजनलाल स्मृति अंक' की अतिरिक्त प्रतियां भी तैयार करवाई गई हैं जिसे आप 60 रुपये सहयोग राशि देकर बिश्नोई मन्दिर, हिसार से प्राप्त कर सकते हैं। यह अंक मुकाम मेले पर भी उपलब्ध रहेगा।

- सम्पादक

आइए अपनी पहचान बनाएं : 7

(लेखिका की इस लेखमाला के पहले छः भाग जनवरी से जून, 2011 के अंकों में प्रकाशित हो चुके हैं।)

किसी भी धर्म विशेष की सम्पूर्ण पहचान का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटक उस धर्म के नाम को माना गया है। प्रत्येक धर्म अपने नाम से जग में जाना व पहचाना जाता है। प्रायः एक धर्म एक ही नाम से जाना जाता है तथा विभिन्न भाषाएं बोलने वाले उसके अनुयायी स्वःधर्म को एक ही नाम से संबोधित करते हैं। इस प्रकार एक ही भाषा से उत्पन्न धर्म के नाम को क्रमिक-विकास की प्रक्रिया में बिना किसी परिवर्तन के उन सभी भाषाओं में समावेशित कर लिया जाता है जो उसके विभिन्न स्थानों पर निवास करने वाले अनुयायी प्रयोग करते हैं। विभिन्न भाषाएं धर्मों के नामों को यथावत् रखते हुए शब्द के रूप में अपना लेती है। भाषाई-व्याकरणीय दृष्टिकोण से धर्मों के नामों को संज्ञा माना गया है। भाषाएं शब्दों को अर्थ अथवा परिभाषा भी प्रदान करती है। किन्तु भाषाओं के परिवर्तन के साथ साथ धर्म की परिभाषा परिवर्तित नही होती है। परिभाषा अथवा अर्थ के अभाव में शब्द की प्रासंगिकता शून्य हो जाती है। सार यह है कि धर्म का नाम शब्द के रूप में भाषा का अंग होता है तथा यह भाषाएं एकाधिक भी हो सकती है। किसी भी भाषा के प्रचलित शब्दों तथा उनके अर्थों के संकलन को शब्दकोष (डिक्सनरी) कहा जाता है। यदि शब्द का अर्थ उसी भाषा में बताया गया है जिसमें शब्द स्वयं है तो उक्त शब्दकोष एकभाषी (मॉनोलिगुअल) कहलाता है तथा शब्द का अर्थ किसी अन्य भाषा में बतलाया गया है तो यह द्विभाषी (बॉईलिंगुअल) शब्दकोष कहलाता है। इसी प्रकार से यदि किसी शब्दकोष में भाषा विशेष के प्रचलित सभी शब्द संकलित है तो यह सम्पूर्ण तथा यदि कुल शब्दों का एक भाग ही इसमें उपलब्ध है तो यह संक्षिप्त (कांन्साईज डिक्सनरी) शब्दकोष कहलाता है।

विभिन्न धर्मों के नामों की भाषाई महत्त्वपूर्णता का अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि सर्व संक्षिप्त डिक्सनरीज में भी इनके नाम शब्दों के रूप में संकलित रहते हैं। यद्यपि एक धर्म का नाम विभिन्न भाषाओं में प्रयोग होता है तथापि मूल रूप से यह एक ही भाषा से उत्पन्न हुआ रहता है एवं प्रायः यह वह भाषा होती है जो उक्त धर्म के उत्पत्ति-स्थान में बोली जाती है। यदि इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो 'बिश्नोई' शब्द का उद्भव हिन्दी भाषा से हुआ प्रतीत होता है। इस शब्द का सन्धिविच्छेद इस संभावना को और अधिक बल प्रदान करता है। किन्तु यदि आप मार्केट में उपलब्ध विभिन्न स्थानों तथा प्रकाशनों से प्रकाशित हिन्दी अथवा अन्य किसी भी भाषा की डिक्सनरी देखें तो इन सभी में एक अभूतपूर्व समानता पाएंगे। इनमें से किसी में भी 'बिश्नोई शब्द नहीं है। तथापि बिश्नोइज्म के पश्चात् स्थापित तथा कई लघु धर्मों तथा संप्रदायों का नाम आपको इन डिक्सनरीज में मिल जाएगा। हिन्दी से उत्पन्न हुआ होने के बावजूद भी यह भाषा इसे मानक शब्द के रूप में मान्यता नहीं देती है तथा यह इसके विभिन्न शब्दकोषों से इसकी अनुपस्थिति से उद्घाटित हो जाता है। यदि 'बिश्नोई' शब्द उस भाषा का ही अंग नहीं बन पाया है जिससे यह उत्पन्न हुआ है तो अन्य भाषाओं तक इसके प्रसार व समावेशन की कल्पना कठिन हो जाती है।

विश्व के विभिन्न भागों में विभिन्न भाषाएं बोली जाती हैं किन्तु औपनिवेशिक प्रभाव के कारण अंग्रेजी विश्व के प्रमुख भाग में संचार का मुख्य साधन है। यह भाषा अपनी लचीली प्रकृति तथा सरलता से ग्रहण हो सकने के गुण के कारण विश्व की सम्पर्क भाषा बनने में सफल रही है। सूचना क्रान्ति की भाषा होने के कारण बिना अंग्रेजी के विश्व की कल्पना दुष्कर है। किसी भी भाषा पर अधिकार करने के लिए उसकी व्याकरण तथा शब्द दो सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटक हैं जिन पर अभ्यास को केन्द्रित करने की आवश्यकता होती है। यदि व्याकरण धनुष है तो शब्द तीर हैं। एक के अभाव में दूसरा निरर्थक है। किसी भी

भाषा के शब्दों के अर्थ प्राप्त करने तथा सीखने के लिए उक्त भाषा का शब्दकोष सर्वोत्तम स्त्रोत है। यह किसी भी शब्द के सन्दर्भ में सूचना का प्रमुख तथा प्राय: प्रथम स्त्रोत होता है। जब कभी भी हमारा सामना किसी नये शब्द से होता है तो सर्वप्रथम हम डिक्सनरी से उस शब्द का अर्थ अथवा परिभाषा प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। सम्पूर्ण विश्व में अंग्रेजी भाषा को सीखने की होड़ मची हुई है तथा इसी कारण मार्केट में अंग्रेजी डिक्सनरीज की बाढ़ सी आई हुई है। इनमें से अधिकतर 'ईंग्लिंश टू हिन्दी' अथवा 'हिन्दी टू ईंग्लिश बाईलिंगुअल डिक्सनरीज' है। हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों ही की डिक्सनरीज से 'बिश्नोई' शब्द की अनुपस्थिति के कारण 'बिश्नोईज्म' 'आधारभूत प्राथमिक सूचना स्त्रोत' से वंचित हो जाता है तथा यह किसी भी प्रकार से 'बिश्नोईज्म' के लिए सकारात्मक विकास नहीं है। यदि कोई गैरबिश्नोई बिश्नोई शब्द से सामना होने पर इसे हिन्दी अथवा अंग्रेजी के शब्दकोष में ढूंढ़ता है तथा उसे यह नहीं मिलता है तो उसके मश्तिष्क में 'बिश्नोईज्म' की छवि हल्की हो जाती है। डिक्सनरी से अनुपस्थिति का सीधा सा अर्थ उस शब्द का अप्रचलित अथवा अज्ञात होना ही लिया जाता है। किसी शब्द का डिक्सनरी में समावेशित होना उस शब्द को उक्त भाषा तथा वह भाषा बोलने वाले लोगों के द्वारा अपनाया जाने का द्योतक है। शब्दकोषों से बिश्नोई शब्द की अनुपस्थिति का सीधा सा अर्थ यह है कि यह शब्द अब तक किसी भी भाषा का अंग नहीं बन पाया है। हम अपने धर्म को महान् बताते नहीं थकते एवं विश्व की कोई भी भाषा हमारे धर्म के नाम को शब्द के रूप में मान्यता नहीं देती। स्थिति विकट है!

भाषाएं प्रचलित शब्दों को ही अपनाती हैं। तो क्या 'बिश्नोई' शब्द अप्रचलित है। क्या बिश्नोई शब्द का अर्थ अथवा परिभाषा डिक्शनरीज में कोई नहीं ढूंढ़ता? क्या बिश्नोई शब्द का किसी भाषा का आधिकारिक भाग ना होना तथा डिक्सनरीज से इसकी अनुपस्थिति को 'बिश्नोईज्म' की अज्ञात स्थिती का सूक्ष्म ही सही किन्तु एक कारक माना जाऐगा?

इंटरनेट के इस युग में 'ऑनलाईन डिक्शनरीज' की भी भरमार है। किन्तु जब आप इनमें से किसी भी डिक्शनरी में 'बिश्नोई' शब्द टाईप करके सर्च करते हैं तो प्रत्येक बार एक ही उत्तर मिलता है: 'देअर वर नो रिजल्टस फाऊण्ड फॉर बिश्नोई डिड यू मिन बिशप?' यही नहीं 'माईक्रोसॉफ्ट वर्ड', जो कि विश्व के सर्वाधिक लोकप्रिय सफल, प्रचलित तथा प्रयोग होने वाले 'सॉफ्टवेअरस' में से एक है, में भी जब बिश्नोई शब्द टाईप किया जाता है तो उसके उसके नीचे लाल रंग की रेखा बन जाती है। जिसका अर्थ यह है कि यह शब्द गलत है तथा कम्प्यूटर इस शब्द को नहीं पहचानता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि बिश्नोई शब्द कम्पयूटर की डिक्शनरी में भी नहीं है। जब इस पर 'राईट क्लिक' किया जाता है तो यह वैकल्पिक शब्द जैसे बिशप, बेशो, बोलशोई आदि भी सुझाता है। भविष्य में 'माईक्रोसॉफ्ट वर्ड' में काम करते समय जब भी आप बिश्नोई शब्द टाईप करे तो इसके ऊपर 'राईट क्लिक' करके 'एड टू डिक्शनरी' पर क्लिक कर दें। इस प्रकार यह शब्द कम्पयूटर की डिक्सनरी में सम्मिलित हो जायेगा तथा भविष्य में बिश्नोई शब्द के नीचे लाल रेखा नहीं बनेगी।

बिश्नोई शब्द से सबंधित अनुसंधान के इस क्रम में 'गुग्गल ट्रांसलेटर', जिसमें गद्य को एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवादित किया जा सकता है, एक सुखद आश्चर्य है। 'गुग्गल ट्रांसलेटर' में अंग्रेजी भाषा में बिश्नोई शब्द लिखने पर यह उसे हिन्दी में भी लिखा दिखाता है जिसका तात्पर्य यह है कि 'गुग्गल ट्रांसलेटर' की डिक्शनरी में यह शब्द उपलब्ध है।

विभिन्न स्थानों तथा प्रकाशनों से प्रकाशित असंख्य शब्दकोष इस समय प्रचलन में है किन्तु राजपाल एण्ड संस द्वारा प्रकाशित हिन्दी शब्दकोष सर्वाधिक लोकप्रिय शब्दकोषों में से एक है। इस प्रकाशन का पता राजपाल एण्ड सन्स 1560, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006 है। इसी प्रकार अंग्रेजी शब्दकोषों में ऑक्सफोर्ड डिक्शनरीज का स्थान विशिष्ठ है। डिक्शनरीज के संसार में इनका सम्मान अद्भुत है। ये डिक्शनरीज 'ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस' द्वारा प्रकाशित

की जाती है जो कि ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय का एक विभाग है तथा विश्व के विभिन्न स्थानों से प्रकाशित होकर अनुसंधान, छात्रवृति एवं शिक्षा के विश्वविद्यालय के उद्देश्यों की पूर्ति हेतु कार्य करता है। भारत में इसका कार्यालय वाई.एम.सी.ए., लाईब्रेरी बिल्डिंग, जयसिंह सड़क, नई दिल्ली-110001 में स्थित है। ऑक्सफोर्ड डिक्शनरीज कई परिमाणों में प्रकाशित होती हैं किन्तु किसी में भी बिश्नोई शब्द सम्मिलित नहीं है। हमें सामूहिक प्रयत्न करने की आवश्यकता है जिससे बिश्नोई शब्द को शब्दकोषों में सम्मिलित करवाया जा सके ताकि यह प्रचलित लोकप्रिय भाषाओं का आधिकारिक हिस्सा बन सके।

किसी भी मानक डिक्शनरी का भाग बनने के लिए एक शब्द के चार तकनीकी भाग सुदृढ़ता से स्थापित होने आवश्यक होते है। शब्द का शुद्ध तथा एकमात्र अर्थ अथवा परिभाषा, सटीक व्याकरणीय निर्देशांक, तकनीकी रूप से शुद्व उच्चारण तथा एकरूप वर्तनी (स्पैलिंग) उक्त चार भाग है। शब्दकोष में सम्मिलित तथा स्थापित होने के लिए शब्द का प्रचलित होना प्रथम शर्त है। विश्व की लगभग सभी सफल भाषाओं की प्रकृति लचीली होती है तथा वे अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्दों को भी अपनाती रहती है। अंग्रेजी भाषा भी इसका अपवाद नहीं है तथा यही कारण है कि ऑक्सफोर्ड डिक्शनरीज एक निश्चित अन्तराल में अपडेट होती रहती हैं।

क्या बिश्नोई शब्द के उपर्युक्त वर्णित चार तकनीकी भाग स्थापित कहे जा सकते हैं? क्या बिश्नोई शब्द का अर्थ अथवा परिभाषा, व्याकरण, उच्चारण तथा वर्तनी का 'फिक्सेशन' होना समय की आवश्यकता नहीं है?

किसी भी शब्द की परिभाषा उक्त शब्द के सर्वाधिक शक्तिशाली पहलू को प्रस्तुत करने वाली होनी चाहिए। किसी भी शब्द का सर्वाधिक प्रभावशाली अर्थ उसकी परिभाषा में शामिल किया जाना चाहिए। 'बिश्नोईज्म' को यदि थोड़ी-बहुत पहचान मिली हुई है तो वह निश्चित रूप से हमारे पूर्वजों द्वारा पर्यावरण रक्षार्थ दिए गऐ बलिदानों के कारण ही है। पर्यावरण के प्रति प्रेम नि:सन्देह 'बिश्नोईज्म' के सर्वशक्तिशाली पहलू के रूप में उभरा है तथा यही तथ्य 'बिश्नोईज्म' की परिभाषा का अपरिहार्य अंग भी होना चाहिए। 'बिश्नोईज्म' की एक संभावित परिभाषा इस प्रकार हो सकती है:-

अंग्रेजी:

An Indian Hindu sect of nature lovers founded in 1485 AD by Jambho Ji and known for their sacrifices for environmental conservation. They are originators of the Chipko movement, follow 29 rules and assume lord Vishnu as the only God.

हिन्दी:

प्रकृति प्रेमियों का हिंदु भारतीय सम्प्रदाय जो सन् 1485 में जाम्भोजी द्वारा स्थापित किया गया तथा जो चिपको आन्दोलन के जनक के रूप में और प्रकृति रक्षार्थ दिए गए बलिदानों के कारण प्रसिद्ध हैं। ये 29 नियमों का अनुसरण करते हैं तथा विष्णु को एकमात्र भगवान मानते हैं।

समाज के प्रबुद्धजनों द्वारा स्तरोन्यन के लिए यह परिभाषा सदैव खुली है।

व्याकरणीय दृष्टि से बिश्नोई शब्द गणनीय संज्ञा (काउंटेबल नाऊन) है। बिश्नोई (BISHNOI) एकवचन है तो बिश्नोइयों (BISHNOIS) बहुवचन है। एक बिश्नोई वह है जो बिश्नोई धर्म अर्थात् बिश्नोईज्म का अनुयायी है। बिश्नोई तथा बिश्नोईज्म दोनो शब्दों के व्याकरणीय निर्देशांक भिन्न है। 'बिश्नोईज्म' अगणनीय संज्ञा (अनकाउंटेबल नाऊन) है तथा इसका बहुवचन संभव नहीं है। इन शब्दों के अधिक अग्रवर्ती व्याकरणीय निर्देशांक समाज के भाषा-विज्ञानी तय कर सकते हैं।

किसी भी शब्द का उच्चारण उस शब्द की आत्मा होती है। बिश्नोई शब्द के मानक व एकमात्र उच्चारण का अस्तित्व में होना अत्यावश्यक है। इसके लिए इस शब्द के तकनीकी शुद्व उच्चारण को रिकॉर्ड करके हमें सभी शब्दकोषों को उपलब्ध करवाना होगा। बिश्नोई शब्द की वर्तनी में हमें विविधता देखने को मिलती है। इन सभी विविधताओं का उन्मूलन करके

हमें इस शब्द की वर्तनी में एकरूपता लानी होगी। महासभा को बिश्नोई शब्द की एकमात्र, मानक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से सटीक वर्तनी को जारी करना चाहिए।

उपर्युक्त वर्णित दोनों प्रकाशनों को महासभा द्वारा बिश्नोई शब्द को उनके शब्दकोषों में शामिल करने के लिए पत्र लिखा जाना समय की आवश्यकता है।

अब प्रकाशकों को बिश्नोई शब्द को उनके द्वारा प्रकाशित शब्दकोषों में सम्मिलित करने हेतु सहमत करने की सबसे बड़ी चुनौती बचती है। वे हमारे आग्रह को तुरंत अस्वीकार कर देंगे तथा इस शब्द के प्रचलन में होने तथा प्रयोग किए जाने का प्रमाण मांगेगे। इस हेतु हमें इन प्रकाशनों को सहायक डाटा उपलब्ध करवाना होगा। बिश्नोईज्म से सबंधित सभी प्रकाशित पुस्तकें, शोध प्रबंध (थिसिस), अनुसंधान जर्नल्स में प्रकाशित शोध लेख, पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख तथा बिश्नोईज्म व बिश्नोई शब्द से सबंधित यह प्रत्येक तथ्य अथवा डाटा जो इस शब्द के प्रचलित होने व प्रयोग किए जाने को ईंगित करता हो इस सहायक डाटा का भाग होगा। 'बिश्नोईज्म' से सबंधित वेब पर उपलब्ध सामग्री तथा विभिन्न सर्च ईन्जिस में 'बिश्नोई' शब्द के लिए हिट्स इस सहायक डाटा का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण व शक्तिशाली भाग होगा।

सर्वज्ञात रूप से गुग्गल वर्तमान समय का सर्वाधिक लोकप्रिय तथा सफल 'वेब सर्च ईन्जिन' है। यह 'ईन्जिन' इसके अन्दर सर्च किए गए प्रत्येक शब्द का डाटा स्टोर करता है तथा वर्षात में यह भी स्पष्ट किया जाता है कि इस वर्ष विश्व भर के लागों ने किस 'की-वर्ड' को गुग्गल में सर्वाधिक बार सर्च किया। प्रत्येक दिन कौन सा शब्द इंटरनेट पर सर्वाधिक हिट किया गया यह भी हम मालूम कर सकते हैं। किसी भी शब्द को गुग्गल पर कितनी बार व कब-कब सर्च किया गया यह हम www.google.co.in/trends पर उक्त शब्द को हिट करके देख सकते है। जब हम इस पर 'बिश्नोई' शब्द को हिट करते हैं तो यह एक टाईम-स्केल ग्राफ हमें दिखाता है। जिससे पता चलता है कि यह शब्द बहुत अधिक सर्च किया जाने वाला शब्द नहीं है। इंटरनेट का प्रयोग करने वाले सभी बिश्नोइयों को चाहिए कि वे जब भी इसका प्रयोग करे गुग्गल में जितनी अधिक बार संभव हो बिश्नोई शब्द टाईप करके सर्च पर हिट करें। ऐसा करके आप अपने समुदाय की सेवा कर रहे होंगे। आईये बिश्नोई शब्द को वेब के संसार का सर्वाधिक 'सर्चड वर्ड' बनाएं। महासभा यदि कोई विशेष दिन निर्धारित करें तो हम एक साथ तथा एक ही समय पर सर्वाधिक सर्चड 'की-वर्ड' का रिकॉर्ड 'बिश्नोई' शब्द के नाम कर सकते है। 'गुग्गल ट्रैंड्स' से लिया गया यह डाटा हम शब्दकोषों के प्रकाशकों को सहायक डाटा के रूप में उपलब्ध करवाएंगे और विश्वास करीये यह बिश्नोई शब्द को विभिन्न शब्दकोषों में सम्मिलित करने के लिए पर्याप्त से भी अधिक होगा। 'गुग्गल ट्रांसलेटर' भी महत्त्वपूर्ण सहायक डाटा के रूप में प्रयोग किया जा सकता है।

एक बार यदि हम बिश्नोई शब्द को विभिन्न शब्दकोषों में सम्मिलित करवाने में सफल हो गए तो 'शब्दवाणी' तथा 'मुकाम' शब्द को भी इसी प्रकार सम्मिलित करवा सकते हैं क्योंकि विश्व के प्रमुख धर्मग्रन्थों तथा धर्म-स्थलों के नाम भी शब्दकोषों के भाग है। 'मुकाम' जिसको कि सामान्यत: फारसी शब्द माना जाता है, संस्कृत धातु 'मूकम्' से भी उत्पन्न हुआ जान पड़ता है। 'मूकम्' का अर्थ ना बोलना अथवा शान्त रहना है। इस प्रकार 'मुकाम' का अर्थ वह स्थान भी हो सकता है जहां भगवान शान्ति में लीन है अर्थात् जहां भगवान मूक हो गए। इसका एक और संभावित अर्थ मूक भगवान का निवास भी हो सकता है, क्योंकि हम सभी जानते हैं हमारे भगवान अपने जीवन के एक प्रमुख भाग में मूक रहे थे।

संभावनाएं अनन्त हैं। कार्यों को सम्पन्न करने की प्रवृत्ति हमें विकसित करनी है।

संतोष पुनियां, राँची, झारखण्ड
07870392017
www.letshaveanidentity.blogspot.com
santoshpunia@myself.com

बिश्नोई धर्म के प्रवर्त्तक गुरु जम्भेश्वर भगवान

हमारे देश में समय-समय पर अनेक संत महापुरुषों ने जन्म एवं अवतार लेकर मानवता को एक सुदृढ़ नैतिक धरातल प्रदान करके आपसी भाईचारा साम्प्रदायिक सद्भाव देश प्रेम भावना में रहने का संदेश दिया तथा सामाजिक बुराइयों दहेज प्रथा, बाल विवाह, मृत्यु भोज, शराब, मांस-मदिरा, अफीम, जुआ व जीव हत्या के विरुद्ध गुरु जम्भेश्वर भगवान ने जन-चेतना जगाई। गुरु जम्भेश्वर महाराज का देश की संत परम्परा में गौरवपूर्ण स्थान है। भगवान के नियमों के विरुद्ध कार्य करने वालों एवं पशु प्रवृत्तियों पर प्रहार करते हुए गुरु जम्भेश्वर जी ने मानवता को एक सुदृढ़ पावन एवं नैतिक धरातल प्रदान किया। आज के भौतिक एवं अशांत युग में उनकी शब्दवाणी के मूल संदेश की उपयोगिता एवं सार्थकता उससे भी कहीं अधिक है जितनी इनके समय में थी। गुरु जम्भेश्वर जी का अवतार श्री कृष्ण जन्माष्टमी अर्थात् भादोवदी अष्टमी विक्रमी संवत 1508 (सन् 1451) को अर्धरात्रि के समय जोधपुर राज्य के नागौर परगने के पीपासर गांव में ग्रामपति ठाकुर श्री लोहट जी पंवार (राजपूत) के घर हुआ। इन्होंने सात वर्ष बाल लीला में अठाईस वर्ष भगवान श्रीकृष्ण की तरह गऊएं चराने और 51 वर्ष तक 'जिये जुगति मरै मुक्ति' देने वाली वाणी कहते हुए व्यतीत किए। श्री गुरु जी के समय में दिल्ली पर बहलोल लोदी का शासन था और उनके पुत्र सिकन्दर लोदी गुरु जी की शरण में आकर उनके शिष्य बने थे। श्री गुरु जम्भेश्वर के विषय में उनके समय की हस्त लिखित पांडुलिपियों एवं शोधग्रंथों के अध्ययनों से पता चलता है कि वे प्रकृति के अधीन नहीं थे प्रकृति उनके अधीन थी। यही कारण है कि वे इस जगत में रहकर कार्य करते हुए भी अन्न जल ग्रहण किये बिना ही स्वात्मानुभूति रूपी स्वर्गीय अमृत पान करते हुए जीवन चला रहे थे। उन्होंने अपनी शब्दवाणी में एक स्थान पर कहा भी है कि 'जीमत पीवत भोगत विलसत दिशा नांही म्हापण का आधारू' श्री गुरु जी के समय लोग अलग-अलग टुकड़ों में बंटे हुए थे। जात पात का भेदभाव बहुत ही गहरा था। गुरु जी ने इस भेदभाव का कड़ा विरोध करते हुए कहा है कि 'उत्तम कुल में जन्म लेने से कोई उत्तम नहीं होता जब तक उत्तम कर्म नहीं करते। जम्भेश्वर जी ने हिंसा की कठोर शब्दों में निन्दा की और अहिंसा का महत्व बतलाया है। हिंसक प्रवृति के लोगों को फटकारते हुए उन्होंने कहा कि बैल भाई से भी ज्यादा प्यारा होता है क्योंकि भाई तो हाथों से साथ देता है मगर बैल कंधा लगाकर साथ देता है और उसी के गले पर तलवार चलाते हो। ऐसे लोग पढ़े लिखे होते हुए भी अनपढ़ हैं और ज्ञान से खाली है। जो गाय जंगल में घास-फूस खाकर आती है और घर आकर सहज ही दूध देती है उसे मार कर खा जाने वालों का भविष्य बहुत ही बुरा होगा। श्री गुरु जी आजीवन ब्रह्मचारी रहे विवाह की बात आने पर उन्होंने माता-पिता को अपना निश्चय बताकर लोक कल्याण हित कार्य करने को अपना लक्ष्य बनाया। माता-पिता के स्वर्गवास के बाद गुरुजी अपनी समस्त सम्पत्ति धोरे (ऊंचे रेत के टीले) पर आकर रहने लगे विक्रम संवत् 1542 में गुरुजी ने आकाल ग्रस्त लोगों की अथाह मदद की और उस मरु भूमि को जन शून्य होने से बचाया था। बाद में गुरु जी ने विक्रमी सम्वत् 1542 (सन् 1485) के कार्तिक बदी अष्टमी से दिवाली तक समराथल धोरे पर कलश स्थापित कर 29 नियमों पर आधारित श्री बिश्नोई धर्म की स्थापना की। यह कार्यक्रम अष्टमी से दीवाली तक चलता रहा और यही कारण है कि बिश्नोई लोग राम की वन से वापसी के साथ-साथ बिश्नोई धर्म स्थापना दिवस के रूप में भी मनाते हैं। श्री गुरु जी की प्रेम और कृपा भाव के कारण ही समाज में हिन्दू, मुसलमान, पंडित, राजा, महाराजा, काजी, मुल्ला, किसान, साधु, संत, महात्मा, मजदूर, व्यापारी, पंडा पुजारी आदि सभी जाति व धर्म के लोग उनके अनुयायी थे। गुरु जी ने व्यापक भ्रमण किया एवं भारत के अतिरिक्त विदेशों में भी जाकर हवन यज्ञ किया। हम कह सकते हैं कि गुरु जम्भेश्वर जी नि:सन्देह एक महान् विभूति थे अपनी वाणी एवं कार्यों के द्वारा कुसंस्कारों एवं झूठ पाखंड पर कड़ा

प्रहार करके उन्होंने स्वस्थ सांस्कृतिक मूल्यों पर परम्पराओं तथा मानवतावादी दृष्टिकोण को स्थापित किया। उन्होंने सच्चाई, सादगी, विनम्रता, सहनशीलता, श्रमशीलता और कथनी-करनी की एक रूपता पर बल दिया एवं शुद्ध मानव धर्म का पाठ पढ़ाया वे सगुणोन्मुखी निर्गुण भक्ति के संस्थापक एवं मरू (राजस्थानी) भाषा में संबोधन करने वाले प्रथम वाणीकार हैं। उनकी वाणी को शब्द वाणी कहा जाता है। इनकी समाधि स्थल मुक्तिधाम मुकाम में स्थित है। साल में दो बार फाल्गुन की अमावस्या एवं आसोज की अमावस्या पर भारी मेले लगते हैं। देश विदेश से खूब यात्री मेलों में पहुंचते हैं। इन मेलों की व्यवस्था समाज की सर्वोच्च संस्था अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा करती है। मेलों में भोजन व्यवस्था व पूरे मेले में अखिल भारतीय श्री गुरु जम्भेश्वर सेवक दल के सेवक हर समय अपनी सेवाएं देते हैं। मुकाम में बड़ा लंगर चलता है। सेवकदल के सेवकों द्वारा साल में एक बार हर बिश्नोई भाइयों के घर से गेहूं इकट्ठा कर लंगर में लाते हैं। इसी से लंगर 24 घंटे चलता है। खाने की, रहने की व्यवस्था है। अखिल भारतीय बिश्नोई महासभा भरपूर सहयोग करती है व इन्हीं की देख रेख में मेलों का सारा प्रबन्ध होता है।

डॉ. शिवकुमार कड़वासरा
पूर्व राष्ट्रीय संगठन महामंत्री, सेवकदल
गांव व डा. गिलवाला वाया संगरीया
जिला हनुमानगढ़ (राज.)

सूचना

बिश्नोई मन्दिर ऋषिकेश में ऊपर के कमरों में एक सोने की अंगूठी मुझे सावन के महीने में मिली है। जिस किसी की भी यह अंगूठी हो पहचान बताकर वह बिश्नोई मन्दिर ऋषिकेश से प्राप्त कर सकता है।

स्वामी जयराम सिंह पंवार
प्रबंधक बिश्नोई मन्दिर, ऋषिकेश

जांभाणी साहित्य अकादमी स्थापित हो

साहित्य समाज का दर्पण व दीपक होता है। मनुष्य के भावों को जागृत करने एवं उसे सद्पथ पर अग्रसर करने का कार्य जितने प्रभावशाली ढंग से साहित्य कर सकता है उतना कोई और माध्यम नहीं। वह जाति व समाज अत्यन्त ही भाग्यशाली होता है जिसके पास साहित्य रूपी धन होता है। बिश्नोई समाज इस दृष्टि से एक अत्यन्त ही भाग्यशाली समाज है। बिश्नोई साहित्य जिसे 'जांभाणी साहित्य' की संज्ञा से जाना जाता है वह अत्यन्त ही समृद्ध है। जांभाणी साहित्य की परम्परा में सैकड़ों ऐसे कवि हुए हैं जो सूरदास व तुलसीदास के समकक्ष हैं परन्तु प्रचार-प्रसार के अभाव में दूसरे लोग तो क्या हम स्वयं उनसे अनभिज्ञ हैं। उदो जी, वील्होजी, सुरजन जी, केसो जी जैसे महाकवि जांभाणी परम्परा में हुए हैं जिनका साहित्य बिश्नोई पंथ का इतिहास है। आज के समय में पाठकों की संख्या व रूचि घटती जा रही है तथा दूसरी ओर उन्हें उचित मूल्य पर सुगमता से जांभाणी साहित्य मिलता भी नहीं है। इसलिए मेरा अनुरोध है कि समाज में एक 'जांभाणी साहित्य अकादमी' स्थापित हो क्योंकि जब तक साहित्य को लेकर कोई स्वतंत्र संस्था नहीं बनेगी तब तक साहित्य का प्रचार-प्रसार नहीं होगा। इस अकादमी के माध्यम से सस्ते साहित्य का प्रकाशन हो तथा इसका पाठक क्लब बने तथा अन्य साहित्यिक गतिविधियां चलें। यदि ऐसा कोई स्थायी कार्य हम करेंगे तभी हमारे उन कवियों का उद्घाटन साहित्य संसार में होगा। इस अकादमी के स्वरूप, संविधान, मुख्यालय, प्रचार-प्रसार व आर्थिक प्रबंधन को लेकर आपके विचार सादर आमन्त्रित हैं। इस विषय को लेकर एक बैठक आसोजी मेले पर 27 सितम्बर, 2011 मंगलवार को प्रातः 9 बजे संभराथल धोरे पर स्वामी रामप्रकाश आश्रम में रखी गई। आपसे अनुरोध है कि आप अधिक से अधिक संख्या में पहुंचकर मार्गदर्शन करें।

स्वामी कृष्णानंद आचार्य
बिश्नोई मंदिर, नजदीक त्रिवेणी घाट, ऋषिकेश,
उत्तराखण्ड 09897390866

बधाई सन्देश

श्री अशोक कुमार बिश्नोई, एच.सी.एस., अतिरिक्त उपायुक्त पानीपत को ग्रामीण विकास और सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान के तहत अति उत्कृष्ट कार्य करने हेतु 'उन्नत भारत सेवाश्री' पुरस्कार दिनांक 20.7.2011 को दिल्ली में आयोजित एक समारोह में प्रदान किया गया। श्री अशोक कुमार जी अमर ज्योति के पूर्व सम्पादक स्व. मनीराम बिश्नोई एडवोकेट के सुपुत्र हैं तथा पिता की भांति ही समाज सेवा के कार्यों में गहन रूचि रखते हैं। आपको 'उन्नत भारत सेवाश्री' पुरस्कार से सम्मानित होने पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

श्री सुभाष गोदारा एडवोकेट पुत्र श्री काशीराम गोदारा निवासी चौधरीवास, जिला हिसार को हरियाणा सरकार ने अतिरिक्त महाअधिवक्ता के पद पर नियुक्त किया है, जिन्होंने अपना पद भार दिनांक 21 मई 2011 को ग्रहण कर लिया है। श्री गोदारा एक प्रतिष्ठित कानूनविद होने के साथ-साथ एक समर्पित समाज सेवी भी हैं। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

किरन बिश्नोई पुत्री श्री कुलदीप बिश्नोई निवासी गांव रावतखेड़ा, तह. व जिला हिसार ने जम्मू में 18 से 20 जून 2011 तक आयोजित जू. नेशनल रैस्लिंग चैंपियनशिप में 67 किलोग्राम भाग वर्ग में रजत पदक जीता। किरण बिश्नोई इससे पहले भी 2008 में हुई राज्यस्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम और हरियाणा ओलंपिक एसोसिएशन द्वारा 2010 में फरीदाबाद में करवाए गए राज्यस्तरीय मुकाबलों में द्वितीय स्थान प्राप्त कर चुकी हैं। इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

सनेस्ता लाम्बा पुत्री स्व. श्री विश्वामित्र लाम्बा निवासी गांव कालवास, जिला हिसार ने आसाम व गुवाहटी में हुई आल इंडिया जी.वी. मावलंकार नेशनल शूटिंग प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त कर कांस्य पदक जीता। शूटर सनेस्ता ने अक्टूबर माह में राज्य शूटिंग प्रतियोगिता में एक रजत व दो कांस्य पदक जीते थे। जिससे इनका नेशनल शूटिंग प्रतियोगिता के लिए चयन हुआ। इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

पवन ज्याणी पुत्र श्री रामप्रताप बिश्नोई, निवासी 83एल.एन.पी. (जोड़कियां), जिला श्रीगंगानगर (राज.) को भा.ज.पा. पदमपुर की कार्यकारिणी में सदस्य नियुक्त किया गया है। ज्याणी वर्तमान में अमृता देवी बिश्नोई पर्यावरण संरक्षण समिति के महासचिव के साथ-साथ समाज की विभिन्न संस्थाओं से भी जुड़े हैं। इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

विक्रम डुडी पुत्र श्री सहीराम डुडी, गांव कालवास जिला हिसार ने लिंगयाज कालेज फरीदाबाद में एम.सी.ए. में 80 प्रतिशत अंक लेकर अपने कालेज में प्रथम स्थान प्राप्त किया है तथा कम्प्यूटर इंजीनियर के पद पर नियुक्त हुए हैं। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

मनीक्षा गोदारा पुत्री श्री मायाराम गोदारा, निवासी भोपालपुरा, जिला श्रीगंगानगर (राज.) ने भारतीय खेल प्राधिकरण केन्द्र (साई) बादल पंजाब में चयन हुआ है। मनीक्षा को भारतीय खेल प्राधिकरण केन्द्र में चयन होने पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

अमित बिश्नोई पुत्र श्री संतप्रकाश बिश्नोई निवासी ई-80, कांता खतुरिया कालोनी, बीकानेर को हाड़ौती ग्रामीण बैंक (प्रवर्तक सेंट्रल बैंक आफ इंडिया) में बैंक प्रोबेशनरी आफिसर के पद पर दिनांक 23.5.2011 को कोटा शहर में नियुक्त किया गया है। आपकी इस नियुक्ति पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार व बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

सुनीता बिश्नोई पुत्री श्री बीरबल एम. बिश्नोई व पुत्रवधु श्री जगमाल मांजू निवासी अरणाय, सांचोर ने हाल ही में पी.यू.सी.-2 में विज्ञान में 93 प्रतिशत अंक हालि करके सी.ई.टी. (कामन एंट्रेंस टैस्ट) की परीक्षा उत्तीर्ण करके एस.डी.एम. कालेज धारवाड़ से एम.बी.बी.एस. में प्रवेश लिया है। आपकी इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

सेजल बिश्नोई पुत्री श्री राजीव बिश्नोई निवासी मण्डी डबवाली, सिरसा ने ताईक्वांडो बोर्ड आफ इंडिया द्वारा पंजाब के जिला श्रीमुक्तसर साहिब में आयोजित द्वितीय ताईक्वांडो कप 2011 में जो 18 से 20 अप्रैल तक आयोजित किया गया था, अपने भार वर्ग में रजत पदक जीता। सेजल ने 2010 में भी जिला सिरसा में आयोजित जिला स्तरीय कराटे प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक जीत कर माता-पिता व समाज का नाम रोशन किया है। इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

प्रदीप पुत्र श्री कृष्ण कुमार धारणिया, उप-कलेक्टर सिंचाई विभाग निवासी गांव गंगा, हाल सिरसा ने अखिल भारतीय स्तर की गेट परीक्षा में 96.15 प्रतिशत अंक प्राप्त करके आई.आई.टी., रूड़की में एम.टेक. में प्रवेश प्राप्त किया है। आपकी इस सफलता पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

दिनेश बिश्नोई पुत्र श्री जगदीश चन्द्र मांजू एडवोकेट निवासी 2099, सैक्टर 27-सी, चण्डीगढ़ ने एम.बी.ए. की परीक्षा अच्छे अंकों में उत्तीर्ण की है। आपका चयन आई.आई.एल.एम. (उच्च शिक्षण संस्थान), गुड़गांव में Astt. Manager Accounts/Finance के पद पर हुआ है। इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार तथा बिश्नोई सभा हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

मास्टर धोलूराम भादू निवासी गांव भाणा, जिला हिसार को सेवक दल शाखा हिसार के प्रधान श्री सहदेव कालीरावणा ने हिसार शाखा का सचिव नियुक्त किया है। मास्टर धोलूराम जी एक समर्पित सेवक हैं जो पिछले 20 वर्षों से सेवक दल में अपनी सेवा दे रहे हैं। इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार तथा बिश्नोई सभा हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

हंसराज गोदारा निवासी गांव भोडिया खेड़ा जिला फतेहाबाद को सेवक दल शाखा हिसार के प्रधान श्री सहदेव कालीरावणा ने हिसार शाखा का कोषाध्यक्ष नियुक्त किया है। हंसराज जी एक समर्पित सेवक हैं जो पिछले 15 वर्षों से सेवक दल में अपनी सेवा दे रहे हैं। इस उपलब्धि पर अमर ज्योति पत्रिका परिवार तथा बिश्नोई सभा, हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

10वीं कक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले होनहार विद्यार्थी

पिंकी रानी 95.8(
पुत्री श्री आत्माराम
गांव असरावाँ (हिसार)

बिमला बिश्नोई 92.4(
पुत्री श्री इन्द्रसिंह बैनीवाल
गांव पारता (फतेहाबाद)

निधि 92(
पुत्री श्री गिरधारी बिश्नोई
गांव खजूरी जांटी
(फतेहाबाद)

निश्चय भादू 92(
पुत्र श्री भगवान दास
सीसवाल (हिसार)

मोनिका रानी 92(
पुत्री श्री राजेन्द्र सिंह
गांव बींसला
(फतेहाबाद)

अंजली 91.1(
पुत्री श्री रामचन्द्र
गांव बुढ़ाखेड़ा,
उकलाना (हिसार)

खुशबू 81.3(
पुत्री श्री मोहनलाल
हिसार

बजरंग 91.60(
पुत्र श्री भूराराम
सिरसा

खुशबू रानी 81(
पुत्री श्री मंगलचंद
गांव आदमपुर

12वीं कक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले होनहार विद्यार्थी

संदीप कुमार (89( )
पुत्र श्री भगतराम
गांव गंगवा (हिसार)

मंजु रानी (82.2( )
पुत्री श्री जगदीश खिचड़
गांव दादुपुर (फतेहाबाद)

अन्जु (82.2( )
पुत्री श्री सुभाष बिश्नोई
गांव साधुवाली, श्री
गंगानगर (राज.)

रेणु (80.8( )
पुत्री श्री राजेश कुमार
फतेहाबाद

आप सभी को उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए अमर ज्योति पत्रिका परिवार तथा बिश्नोई सभा हिसार की ओर से हार्दिक बधाई।

जीवन दर्शन

किया हुआ कर्म कभी व्यर्थ नहीं जाता

यह कर्म सिद्धांत है कि किया हुआ कर्म कभी व्यर्थ नहीं जाता। अगर आज आपको कर्म का फल नहीं मिल रहा यह सोच कर पुरुषार्थ करना छोड़ें नहीं। कर्म का फल जरूर मिलेगा। किसी अन्य कर्म के कारण देरी हो रही है। फल न मिलने के कारण निराश हो जाते हैं निराशा बहुत बड़ा शत्रु है जो कर्म करने वाले को कर्म करने से रोकता है। मन में निराशा आने पर मन में बुरे व नकारात्मक विचार आने शुरू हो जाते हैं। जो पुरुषार्थ को आगे नहीं बढ़ने देते। निश्चय आत्मा विजयन्ते निश्चय रखकर आगे बढ़ने में हिम्मत के कदम रखो, दृढ़ संकल्प रखो कि तुमको मंजिल तक पहुंचना ही है। मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। अर्थात् जिसका मन हार गया वह हार गया। अत: निराशा को कभी जीवन में आने न दो। पुरुषार्थ तपस्या है, साधना है, इसमें थोड़ी भी ढील न आने दो। पुरुषार्थ के साथ यह भी ध्यान रहे कि अहम् भाव सूक्ष्मपन में कभी न आए। पुरुषार्थ में छोटी-छोटी कमजोरियां भी रोडा अटकाती हैं। थोड़ी सी समझकर जो टालता है वह गलती कर बैठता है। नशे की आदत थोड़े-थोड़े में पूरा नशेड़ी बना देती है। उसे पता ही नहीं लगता। इतिहास गवाह है कि जिन राजाओं ने राज्य गंवाए छोटी-छोटी गलतियों व लापरवाही के कारण। अच्छे काम को कभी कल के लिए टालो नहीं। समय किसी के लिए रूकता नहीं और न ही रूकेगा। जो करना है अभी कर लो। कल का क्या भरोसा। अच्छे काम को टालो मत। खराब काम को टाल सकते हो जैसे किसी ने चार लोगों के बीच आपका अपमान किया और आपको बहुत गुस्सा आ गया लेकिन उस समय आप बदला लेने का विचार टाल दो कि अभी छोड़ देता हूं कल देखेंगे या परसों देखेंगे। कल और परसों तक आपका गुस्सा आधा हो जाएगा और वह बला टल जाएगी। ऐसे खराब चीजों को टालने से आपकी कमजोरी धीरे-धीरे कम होकर खत्म हो जाएगी और आप अच्छे कर्म की ओर अग्रसर होते जाएंगे। पुरुषार्थ बढ़ता जाएगा और आपका भाग्य बनता जाएगा।

जीना उसी का सफल होता है जो दूसरों की भलाई के लिए जीता है। स्वयं के लिए तो पशु पक्षी भी जीते हैं फिर इंसान व पशु पक्षी में क्या फर्क हुआ? किसी ने पूछा- कितने साल जीया? उत्तर मिला- 80 साल जीया। 80 साल तो जीया परन्तु धरती पर भार बनकर जीया। धरती का अन्न खाया, पानी पीया, हवा खाई और अंत में बिस्तर गोल कर चला गया। उसने 80 साल जीकर हीरे जैसा जीवन खराब कर लिया। अपने जीवन में दूसरों को क्या दिया हमेशा ही लिया। उसको जिंदगी में समाज ने, माता-पिता, परिवार ने, पड़ोसी ने, सरकार ने, अध्यापकों ने दिया ही दिया, उसके बदले में उसने क्या दिया। कर्जदार बनकर रह गया। उसने अपने जीवन में अच्छा कार्य कितना किया, दूसरों को कितना वक्त दिया, कितनों की मदद की, केवल वही समय (मानो 2 महीने) सफल हुआ बाकी 79 साल 10 महीने तो व्यर्थ गए। इसलिए कहते हैं कि मनुष्य जंगली जानवरों से ज्यादा खराब हो गया है। असली जीना वही है जिसमें उसने कितनों को सुख दिया, कितनों के आंसू पौंछे। अत: यह जीवन उसका पशु समान बन गया। जिसमें उसने खाया, पीया, संतान पैदा की, घर गृहस्थी में गधे के समान कार्य किया। यदि जीवन को सफल करना है तो ऐसा जीवन जीए जो दूसरों के लिए मिसाल बने। इसके लिए स्वयं का स्वदर्शन चक्र घुमाना होगा जिससे सोई हुई बुद्धि जागृत होगी। आध्यात्मिकता व ईश्वर की साधना से स्वयं के अंतर्मन को प्रकाशित कर सकते हो। सोई हुई अंतरात्मा को जगाकर नेक कार्यों में लगाओ। बुराइयों को छोड़ नेक कार्यों में लगना और देवता समान बनने की कोशिश करना जिनमें एक भी अवगुण नहीं। हम लक्ष्मी नारायण के वंशज हैं हम भक्ति प्रार्थना करते हैं परन्तु देवता समान गुण धारण करना असली भक्ति है। देवता तो यही चाहेंगे कि हमारे वंशज (बच्चे) हमारे समान बनें।

प्रोफ़ेसर चन्द्रकला बिश्नोई
एफ.सी. कॉलेज, हिसार

पाठकों की कलम से.....

अमर ज्योति का जुलाई-अगस्त 2011 का 'चौ. भजनलल स्मृति अंक' पढ़ने को मिला। सम्पूर्ण अंक इतना आकर्षक व रूचिकर था कि आरम्भ से लेकर अन्त तक पढ़ने के पश्चात ही इसे छोड़ पाया। जैसा चौ. भजनलाल जी का आकर्षक व बहुआयामी व्यक्तित्व व कृतित्व था, यह अंक भी उसी के अनुरूप है। चौ. भजनलाल जी को एक राजनेता के रूप में तो सभी जानते हैं परन्तु इस अंक ने उनके व्यक्तित्व के अनेक अनछुए पहलुओं को प्रकट कर उन्हें एक महापुरुष सिद्ध किया गया, जो प्रशंसनीय है। विवेच्य अंक पाठकों को जहां भावुकता के सागर में डुबोता है वहीं उनके सामने एक बहुत बड़ा संदेश भी छोड़ता है। इस अंक के माध्यम से चौ. भजनलाल जी के जीवन संघर्ष को पहली बार सर्वांगपूर्ण रूप से पाठकों के सामने उद्घाटित किया गया है। चौ. भजनलाल जी के पूर्वजों व वंशजों की जो जानकारी यहां दी गई है वह शोधपरक है। उनकी राजनीतिक यात्रा की प्रस्तुति व विश्लेषण हमें यह प्रेरणा देता है कि एक व्यक्ति छोटे पद से अपनी यात्रा आरम्भ कर बड़े से बड़े पद पर पहुंच सकता है यदि उसमें चौ. भजनलाल जैसे गुण हों। हरियाणा एवं भारतीय राजनीति को उनकी महान देन थी। विभिन्न राजनेताओं एवं विद्वानों के लेखों एवं कथनों से चौ. साहब के बारे में जो जानकारी यहां प्रस्तुत हुई है वह अति महत्त्वपूर्ण है। लेखन सामग्री के अतिरिक्त चौ. भजनलाल जी से सम्बन्धित 80 के लगभग जो छायाचित्र यहां प्रकाशित किए गए हैं वे इस पत्रिका के प्राण हैं। नि:सन्देह इन छायाचित्रों से पत्रिका अत्यन्त आकर्षक व गरिमामयी बन पड़ी है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ तो अपने आप में जीवन्तता लिये हुए है। चौ. भजनलाल जी जैसे महान् पुरुष के जीवन चरित्र पर ऐसा भव्य अंक प्रकाशित करना ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि हो सकती है। सार रूप में कहा जा सकता है कि यह स्मृति अंक पठनीय, मननीय एवं सग्रहणीय है जो कि अपने आप में एक दस्तावेज है।

इस अंक के प्रकाशन एवं सम्पादन के लिए बिश्नोई सभा, हिसार व सम्पादक महोदय बधाई के पात्र हैं।

-डॉ. बाबूराम, ऐसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

---

22 अगस्त, 2011 को जन्माष्टमी के पावन पर्व पर प्रकाशित 'अमर ज्योति' के 'चौ. भजनलाल स्मृति अंक' के प्रकाशन से 'अमर ज्योति' के इतिहास में एक स्मरणीय व प्रशंसीय कार्य हुआ। इस मनमोहक व भव्य अंक के प्रकाशन के लिए बिश्नोई सभा, हिसार व 'अमर ज्योति' के सम्पादक बधाई के पात्र हैं। नि:सन्देह ही यह प्रयास बिश्नाई रत्न चौ. भजनलाल जी को सच्ची श्रद्धांजलि है। इस पत्रिका में चौ. भजनलाल जी व उनके परिवार के दुर्लभ चित्र तो हैं ही, साथ ही अनेक सारगर्भित लेख एवं संस्मरण भी संकलित हैं। मेरा विश्वास है कि पाठक वर्ग इस अंक को सदैव सहेज कर रखेंगे।

-कृष्ण भादू
तायल बाग, हिसार 94160-41926

बिश्नोई रत्न चौ. भजनलाल जी के बिना यह प्रथम जन्माष्टमी थी। सभी को उनकी कमी महसूस हो रही थी। तभी मंच से घोषणा हुई कि मुख्य अतिथि चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई 'अमर ज्योति' के 'चौ. भजनलाल स्मृति अंक' का लोकार्पण करेंगे, सभी की निगाहें मंच की ओर लग गई। ज्यों ही इस अंक का लोकार्पण हुआ तो इसके भव्य आवरण को देखकर एक बार तो ऐसा लगा कि चौ. भजनलाल जी का अवतरण हो गया हो। पूरे अंक का अवलोकन किया तो चौ. भजनलाल जी का जीवन चित्र हमारी आंखों के सामने घूम गया। इस अंक में प्रकाशित लेख पढ़ते समय मन डूबने तैरने लगा। उनकी खट्टी-मीठी यादों से मन सराबोर हो गया। स्मृति अंक के माध्यम से चौ. भजनलाल जी की स्मृतियां अमर हो गईं। मेरा मानना है कि आने वाली पीढ़ियों के लिए यह अंक संदर्भ ग्रन्थ होगा।

बिश्नोई सभा, हिसार व सम्पादक महोदय को मेरा साधुवाद।

-महेन्द्र सिंह माल
पूर्व सरपंच, चिकनवास (हिसार)

जन्माष्टमी महोत्सव हिसार : एक झलक

जन्माष्टमी महापर्व का आगमन जनमानस के जीवन को स्फूर्ति व आनन्द से सराबोर कर देता है। समस्त हिन्दू समाज, विशेषकर बिश्नोई समाज में इस महापर्व का विशेष महत्त्व है। भादो बदी अष्टमी को श्री विष्णु अवतार गुरु जम्भेश्वर भगवान का जन्मोत्सव बिश्नोई समाज में प्रति वर्ष बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। जन्माष्टमी का ये पावन-पर्व जो कि बिश्नोई मन्दिर, हिसार के अतिरिक्त अन्य कई स्थानों पर भी मनाया जाता है, लेकिन बिश्नोई सभा, हिसार द्वारा मनाया जाने वाला ये उत्सव समस्त बिश्नोई समाज ही नहीं वरन अन्य धर्मों तथा समाजों में भी अपना विशिष्ट स्थान रखता है। समाज का हर व्यक्ति इस महापर्व के आगमन का बड़ी उत्कण्ठा व उत्सुकता से प्रतीक्षा करता है। गुरु जम्भेश्वर भवन, वील्हो जी पुस्तकालय, यज्ञशाला व मन्दिर की विशाल अटालिकाएं मानो मुख्य द्वार से रीस करके अपनी भव्य छटा एवं सुन्दरता की होड ले रही हो।

चौ. भजनलाल स्मृति भवन का लोकार्पण करते मुख्यातिथि चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई, अध्यक्षा श्रीमती जसमां देवी, विशिष्ट अतिथि श्री सलील बिश्नोई, श्री रामनारायण बिश्नोई, पूर्व सांसद श्री रामजीलाल साथ हैं सभा प्रधान श्री सुभाष देहडू, सेवक दल प्रधान श्री सहदेव कालीरावण।

21 अगस्त, 2011 को दोपहर बाद बिश्नोई सभा, हिसार की बैठक हुई जिसमें बिश्नोई सभा हिसार के प्रधान श्री सुभाष देहडू, श्री सहदेव कालीराणा प्रधान, सेवक दल, हिसार, श्री मनोहर लाल गोदारा - सचिव बिश्नोई सभा हिसार, विभिन्न मन्दिर एवं सभा के प्रधान एवं समाज के गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया तथा महापर्व की पूर्व वेला में विचार-विमर्श किया गया। सायं को सेवक दल हिसार की एक बैठक हुई जिसमें श्री सहदेव कालीराणा-प्रधान सेवक दल हिसार, श्री सुभाष देहडू-प्रधान बिश्नोई सभा, हिसार, श्री बनवारी लाल बिश्नोई - प्रधान जीव रक्षा सभा, हिसार, श्री हनुमान सिंह बिश्नाई - प्रधान दिल्ली, श्री छोटू राम भादू, XEN, कामरेड रामेश्वर लाल, श्री आर. के. बिश्नोई दिल्ली ने सेवकों को अनुशासन पूर्वक सेवा करने की प्रेरणा दी।

22 अगस्त को प्रात: सूर्योदय के साथ ही 120 शब्दों के साथ महायज्ञ किया। पवित्र पाहल बनया गया तत्पश्चात् बिश्नोई सभा हिसार के प्रधान द्वारा ध्वजारोहण किया गया। गीत मृदंग ध्वनि तथा गुरुजी के जयकारों की गूंज के साथ ही भगवा ध्वज पूरे वेग से आकाश में लहरा उठा।

प्रात: ही श्रद्धालु हवन में आहुति डालकर अपने इष्ट गुरु जम्भेश्वर भगवान को प्रणाम कर पण्डाल में जमा होने लगे। जीव रक्षा समिति प्रधान श्री बनवारी लाल बिश्नोई व उनकी टीम गणमान्य अतिथियों को स्वागत सहित हवन स्थल पर पहुँचा रहे थे। बिश्नोई सभा हिसार की ओर से उपस्थित जनसमूह का स्वागत

श्री रामेश्वर कामरेड ने मंच संचालन आरम्भ करते हुए किया। उन्होंने पहले श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का जयकारा लगवाया और बाद में 'स्व. चौ. भजनलाल बिश्नोई रत्न अमर रहे' के नारे से मंच गूंज उठा। एक-एक कर सभी अतिथि मंच पर पहुंचने लगे। ठीक 11 बजे मुख्यातिथि चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई, विधायक, आदमपुर अपनी माता श्रीमती जसमां देवी पूर्व विधायिका के साथ मुख्य द्वार पर पहुंचे जहां सभा प्रधान व पदाधिकारियों ने उनका भव्य स्वागत किया। हवन ज्योति दर्शन एवं पाहल ग्रहण के पश्चात् मुख्यातिथि व अन्य अतिथियों ने चौ. भजनलाल स्मृति भवन का लोकार्पण किया।

अमर ज्योति के 'चौ. भजनलाल स्मृति अंक' का लोकार्पण करते मुख्यातिथि व अन्य अतिथिगण।

ठीक 11:30 बजे श्री बनवारी लाल सोढा ने साखी- 'तारण हार थला सिर आयो.....' का गायन कर सबका मन मोह लिया। मंच का संचालन श्री ताराचंद खिचड़ व कामरेड रामेश्वर डेलू ने किया। सर्वप्रथम श्री सुभाष देहडू, प्रधान बिश्नोई सभा हिसार ने बिश्नोई सभा की गतिविधियों का उल्लेख किया और कहा कि चौ. साहब के बिना समाज में शून्य पैदा हो गया है।

बिश्नोई सभा द्वारा प्रकाशित मासिक पत्रिका 'अमर ज्योति' के 'चौ. भजनलाल स्मृति अंक' का लोकार्पण श्रीमती जसमा देवी, पूर्व विधायक आदमपुर एवं चौ. कुलदीप बिश्नोई, विधायक आदमपुर द्वारा किया गया। चौ. भजनलाल के स्मृति अंक पर सम्पादक डॉ. सुरेन्द्र कुमार ने प्रकाश डाला और सुझाव भी आमन्त्रित किए।

श्री सहदेव कालीराण प्रधान, सेवक दल ने कहा कि चौ. साहब को बहुत नजदीक से देखा है अब चौ. साहब की कमी महसूस हो रही है। सेवक दल हिसार द्वारा 675 क्विंटल गेहू व 40 हजार नकद राशि का विवरण प्रस्तुत किया गया। श्री हनुमान बिश्नोई ने कहा कि चौ. भजनलाल, चौ. मनीराम गोदारा, चौ. रामसिंह खोखर आज हमारे बीच नहीं हैं, इसलिए हमें और अधिक मजबूती से कार्य करना चाहिए। सेवक दल के सेवकों को चौ. कुलदीप बिश्नोई द्वारा सम्मानित किया गया। श्री रिछपाल जांगू, श्री सुभाष चिन्दड़, मखनलाल लीलस, श्री हरिसिंह मंगाली सुरतिया, मुन्शीराम कालीरावण, श्री जगदीश लान्धड़ी को सम्मानित किया गया। इसी कड़ी में जीव रक्षा के सदस्यों को भी सम्मानित किया गया। श्री अशोक बिश्नोई, ADC पानीपत को भी सम्मानित किया गया। स्व. श्री मनीराम बिश्नोई एडवोकेट के सुपुत्र श्री अशोक बिश्नोई, ADC पानीपत अपने पिता की भांति ही कुर्सी पर बैठ कर जन्माष्टमी महापर्व का विश्लेषण कर रहे थे, बाबूजी भी इसी तरह बैठकर विश्लेषण किया करते थे।

स्वामी रामानन्द महाराज ने समाज में बुराइयों को दूर करने के लिए शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए जोर दिया तथा कहा कि हिसार सभा सक्षम है, समाज में मिलजुल कर रहें। श्री सुभाष गोदारा अतिरिक्त एडवोकेट

जनरल हरियाणा ने कहा, बिश्नोई मन्दिर में प्रारम्भ में तीन समाजसेवी–श्रीराम जाणी, श्री पतराम जी एवं श्री रामरख जी का बहुत बड़ा योगदान रहा है। फिर राजनैतिक नेतृत्व में श्री मनीराम गोदारा, चौ. भजनलाल जी ने समाज का बहुत विकास करवाया। अब इसी विरासत को आगे बढ़ाना है।

श्री गुरमेश बिश्नोई ने कहा कि बिश्नोई समाज को आरक्षण मिलना चाहिए। पिछड़ा आयोग के सदस्य श्री जयसिंह बिश्नोई ने कहा कि चौ. भजनलाल के नाम से समाज जाना जाता है, आज सारा बिश्नोई समाज शोकग्रस्त है। चौ. भजनलाल की बराबरी कोई नहीं कर सकता। समाज के कार्य में सभी एक साथ रह कर विकास करेंगे।

अमर ज्योति की वेबसाइट लांच करते मुख्यातिथि चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई, विशिष्ट अतिथि श्री रामनारायण बिश्नोई व श्री सलील बिश्नोई।

श्री सलील बिश्नोई (विधायक, कानपुर, उ.प्र.) ने कहा कि 'चौ. भजनलाल स्मृति अंक' में प्रकाशित चौ. भजनलाल का व्यक्तित्व और कृतित्व हमारे मार्ग को आलोकित करेगा। उन्होंने कहा 'जब अधर्म बढ़ रहा था तब बिश्नोई समाज की स्थापना श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान ने सही मार्ग पर चलने के लिए 29 धर्म नियमों की एक आचार संहिता मानव समाज को दी। श्री अमीरचन्द मक्कड़, पूर्व विधायक ने कहा कि गुरु के बनाये रास्ते पर चलते हुए 363 बिश्नोई लोगों ने खेजड़ली में अपना बलिदान दिया। चौ. भजनलाल का हरियाणा के विकास में बहुत बड़ा योगदान रहा है।

चौ. दूड़ाराम, पूर्व संसदीय सचिव ने कहा कि चौ. भजनलाल के निधन से हुई क्षति की भरपाई करना मुश्किल है। देश के अन्दर कोई मन्दिर व धर्मशाला जैसे मुकाम मन्दिर, दिल्ली, पंचकूला आदि का विकास करवाया और चौ. भजनलाल के द्वारा अनेक प्रशासनिक कदम उठाये हैं।

पूर्व सांसद पण्डित श्री रामजीलाल ने कहा श्री गुरु जम्भेश्वर महाराज ने मानव जाति के कल्याण के लिए बहुत अच्छे नियम दिये जिनसे समाज का समुचित विकास हो सकता है। गुरु जी के बाद स्वामी वील्हो जी आये। भटकी हुई जनता को सही रास्ता दिखाया। स्वामी वील्हो जी के बाद चौ. भजनलाल ने समाज का विकास किया। चौ. साहब के बाद चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई का साथ देना चाहिये ताकि समाज को एक कुशल नेतृत्व मिल सके।

श्री रामनारायण बिश्नोई एडवोकेट पूर्व उपाध्यक्ष राजस्थान विधान सभा ने कहा कि चौ. भजनलाल ने समाज को आगे बढ़ाया। समाज चौ. साहब का ऋणी है। हरियाणा के अलावा अन्य कई प्रदेशों में भी विकास कार्य करवाये। गुरु जम्भेश्वर भगवान के बताये नियमों पर चलने से देश का पर्यावरण शुद्ध हो सकता है।

अब वह समय आया जिसका लोगों को बेसब्री से इन्तजार था, जब समारोह के मुख्य अतिथि चौ. कुलदीप सिंह बिश्नोई, अध्यक्ष हरियाणा जनहित कांग्रेस

(बी.एल.), विधायक आदमपुर ने उपस्थित जनसमूह का अभिवादन किया तथा श्री गुरु जम्भेश्वर अवतार दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दी। श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान द्वारा बताए गए 29 धर्म नियम केवल बिश्नोई समाज के लिए निर्धारित नहीं हैं, बल्कि पूरा मानव समाज इसे अपनाकर अपना कल्याण कर सकता है। इन धर्म नियमों को मानव अपने व्यवहार में लागू करे। एक व्यक्ति अगर हिम्मत करता है तो सब कुछ कर सकता है, जैसे अन्ना हजारे ने सरकार को हिला कर रखा है। इस प्रकार हर व्यक्ति सब कुछ कर सकता है। अगर वह अपनी आत्मा की आवाज को लागू करता है। लड़कियों की शिक्षा पर जोर देकर कहा कि समाज का तभी विकास होगा जब लड़कियाँ शिक्षित होंगी। माता-पिता की सेवा करना बहुत ही आवश्यक है। क्योंकि मां-बाप हमेशा बच्चे का कल्याण और विकास देखना चाहते हैं। पुत्र कितना भी निकम्मा क्यों न हो माँ-बाप हमेशा उसकी भलाई ही चाहते हैं। समारोह की अध्यक्षता श्रीमती जसमां देवी, पूर्व विधायक आदमपुर ने की। इस अवसर पर श्री मनोहरलाल गोदारा, सभा सचिव; श्री हेतराम धारणियां, श्री अमरसिंह मांजू, श्री कृष्ण राहड़, श्री कृष्ण बैनीवाल, श्री भगवानाराम फुरसाणी, श्रीमती सरस्वती देवी, उपाध्यक्ष; श्री नत्थूराम जी धतरवाल, कोषाध्यक्ष; श्री राजाराम खिचड़; श्री रामस्वरूप मांझू, उपाध्यक्ष महासभा; श्री जगदीश कड़वासरा, सहसचिव; श्री ऋषि पूनियां; श्री ओमप्रकाश कैनेडी; श्री राजाराम भादू; श्री सुल्तान जी धारणियां, प्रधान गौशाला मुकाम; श्री महेन्द्र सिंह माल, पूर्व सरपंच; श्री रामकुमार कड़वासरा; श्री कृष्ण देव पंवार, श्री रणधीर पनिहार आदि प्रमुख गणमान्य व्यक्ति मंच पर विराजमान थे। इस कार्यक्रम में 'चौ. भजनलाल स्मृति अंक' आकर्षण का मुख्य केन्द्र रहा।

सायं सर्वधर्म सम्मेलन के आयोजन में श्री रामेश्वर डेलू कामरेड ने मंच संचालन किया। बिश्नोई सभा हिसार द्वारा आयोजित सर्वधर्म सम्मेलन में कई धर्मों के प्रमुख विद्वानों तथा वक्ताओं को आमन्त्रित किया गया था। आचार्य श्री सत्यकाम जी ने वेदों का सार बताते हुए कहा कि अपने परिवार, राष्ट्र के प्रति अपने कर्त्तव्यों का पालन करना ही धर्म पालन माना जाता है। श्री राजेन्द्र फोगाट ने कहा कि सनातन धर्म वट वृक्ष है, इसी से अन्य धर्म की शाखाएं निकली हैं। सिक्ख धर्म के वक्ता ने कहा कि सिक्ख का अर्थ है सीखना। गुरु नानक जी ने जात-पात का खण्डन किया है जिस प्रकार गुरु जम्भेश्वर जी ने कहा कि 'उत्तम कुली का उत्तम न होयबा कारण किरया सारूं'। श्री रामस्वरूप जी आर्यसमाज ने कहा कि वेद से मानव कल्याण हो सकता है। राज्यकवि श्री उदयभानु हंस ने कहा कि 'तुम स्वर्ग धरती का सिंगार करो, सपनों को नहीं सच को नमस्कार करो।' आदमी पैदा होता है और इंसान बनाया जाता है। गुरु जम्भेश्वर महाराज एक पर्यावरणविद् थे। मानव जाति के अलावा जीव पर दया करने का रास्ता गुरु जी ने ही बताया है ताकि सभी जीवों से प्रेम किया जाए।

श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान को रात्रि जागरण में संत स्वामी लालदास जी, स्वामी चेतन प्रकाश जी, स्वामी बद्रीप्रसाद जी, श्री बनवारी लाल सोढ़ा, पुजारी बिश्नोई मन्दिर हिसार ने आरती, साखी व भजनों के द्वारा रात्रि जागरण में श्रद्धालुओं का मन मोह लिया। 12:21 मिनट पर गुरु महाराज की आरती गाई गई। लोहट घर लाल हुआ, बधाई हो! बधाई हो! रामकुमार खिचड़ ने मन मोहित कर दिया। 23 अगस्त, 2011 को 120 सब्दों के पाठ के द्वारा हवन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। सेवक दल की सभा कर सेवकों का धन्यवाद श्री सहदेव कालीराण प्रधान सेवकदल हिसार, श्री सुभाष देहडू, प्रधान बिश्नोई सभा हिसार, श्री रिछपाल जांगू, श्री भगवान दास भादू, श्री धोलूराम जी, हंसराज गोदारा, उपाध्यक्ष सेवक दल आदि सेवकों का धन्यवाद किया गया। श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान की अटूट कृपा समस्त बिश्नोई समाज पर रही है और आगे भी गुरुजी की कृपा हमेशा रहे इसी कामना के साथ।

डॉ. कृष्ण कुमार जौहर
दयानन्द महाविद्यालय, हिसार

जन्माष्टमी महोत्सव – मण्डी डबवाली

दिनांक 22-8-2011 को बिश्नोई धर्मशाला के पवित्र प्रांगण में श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान का 561वाँ अवतार दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। धर्मशाला के प्रांगण में 15-8-2011 से ही जम्भवाणी हरि कथा का आयोजन किया गया। कथा वाचक परम श्रद्धेय सन्त शिरोमणि स्वामी श्री राजेन्द्रानन्द जी हरिद्वार व स्वामी श्री सुखदेव जी महाराज द्वारा लगतार सात दिनों तक श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के शब्दों व 29 नियमों पर प्रकाश डाला और साखियों, भजनों व प्रवचनों द्वारा श्रद्धालुओं का मन मोह लिया। स्वामी जी ने कथा के प्रवचनों में गुरु जम्भेश्वर के उपदेशों की व्याख्या की। स्वामी जी ने यह भी कहा कि 'बिश्नोई रत्न' श्री भजनलाल जी के निधन से बिश्नोई समाज को एक बड़ी क्षति हुई है जिसको कभी पूरा नहीं किया जा सकता है। चौ. भजनलाल जी ने बिश्नोई समाज की पहचान विश्व स्तर पर पहुंचाई। चौ. साहब ने पिछड़े समाज को आगे बढ़ाया। 21-8-2011 को एक विशेष शोभायात्रा निकाली गई जो कि धर्मशाला से शुरू होकर पूरे बाजार का चक्कर लगा कर वापिस धर्मशाला पहुंची। शोभायात्रा का रास्ते में भव्य स्वागत किया गया। सायं को रात्रि जागरण किया गया जिसमें श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान के जन्म की कथा स्वामी जी ने विस्तार से बतलाई। श्री जाम्भोजी के लिए सुन्दर पालना सजाया गया। सभी श्रद्धालुओं को नमन किया और अपने हाथ से पालने को हिला करके खुशी जाहिर की। 22-8-2011 सुबह ठीक 7 बजे हवन शुरू किया गया। स्वामी जी ने 120 शब्दों का पाठ कर सभी को पाहल दिया। अब सबको इन्तजार था तो मुख्य अतिथि जी का। ठीक 10 बजे मुख्य अतिथि श्री राम सिंह बिश्नोई, से.नि. आई.पी.एस. धर्मशाला के मुख्यद्वार पर पहुँचे। जिनका प्रधान श्री कृष्णलाल जी जाजूदा व समाज के प्रबुद्ध व्यक्तियों ने बड़ी गर्मजोशी के साथ स्वागत किया। उनके साथ श्री ओमप्रकाश जी डी.आर.ओ. भी थे। मुख्य अतिथि ने धर्मशाला के प्रांगण में पहुंच कर हवन में आहुति दी, पाहल ग्रहण किया। इसके बाद श्री रामसिंह जी बिश्नोई, स्वामी राजेन्द्रानन्द, श्री कृष्ण लाल जी जाजूदा, श्री नरसी राम जी थालोड़, डी.एम.ओ. व अन्य समाज के लोगों ने मिलकर ध्वजारोहण किया। फिर मुख्य कार्यक्रम शुरू हुआ। इस कार्यक्रम में अखिलभारतीय जीव रक्षा के अध्यक्ष श्री रमेश कुमार जी राहड़, श्री हनुमान जी ज्याणी, बिश्नोई सभा सिरसा के महामंत्री श्री ओमप्रकाश जी बिश्नोई, श्री नरसीराम जी थालोड़ ने धर्मशाला की नींव से लेकर अब तक की सभी गतिविधियों का उल्लेख किया। बिश्नोई युवा संगठन के उपाध्यक्ष श्री राजीव गोदारा, श्री कृष्णलाल जी सीगड़, महासचिव श्री बृजलाल जी खीचड़, श्री श्रवण कुमार जी एडवोकेट व समाज के अन्य महानुभाव उपस्थित थे। अच्छे अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया ताकि भविष्य में और अधिक अच्छे अंक प्राप्त कर सकें। मुख्य अतिथि जी ने अपने भाषण में कहा कि समाज को आगे बढ़ाने के लिए गांवों में कमेटियां बनाई जायें जिससे नशे की प्रवृत्ति पर अंकुश लगाया जाये और युवाओं को जागृत किया जाए। नशे को व समाज में फैली कुरीतियों को रोका जाये और कहा कि अगर युवा कमजोर तो समाज कमजोर और युवा मजबूत तो समाज मजबूत होता है और समाज तरक्की की ओर जाता है। उसके बाद दूर दराज से आये सभी श्रद्धालुओं का आभार व्यक्त किया और सभी का धन्यवाद किया। सभी ने मिलकर प्रसाद ग्रहण किया। सेवक दल के सदस्यों ने बहुत अच्छी सेवा दी जो कि सराहनीय कार्य था। सभा के व्यवस्थापक भंवर लाल बिश्नोई, भीलवाड़ा ने कार्यक्रम में अच्छी सेवा दी।

इन्द्रजीत बिश्नोई
बिश्नोई सभा मण्डी डबवाली

समाचार विविधा

विश्नोई समाज में जाम्भाणी धर्मरथ द्वारा जनजागरण अभियान का दूसरा चरण सम्पन्न

अखिल भारतीय विश्नोई महासभा का ग्यारहवां अधिवेशन अक्टूबर 2010 में मुक्तिधाम मुकाम, जिला बीकानेर में आयोजित किया गया, इस अधिवेशन के साथ विश्नोई धर्म स्थापना की 525वीं वर्षगांठ भी मनाई गई थी। अधिवेशन के समापन पर अखिल भारतीय विश्नोई महासभा एवं संत समाज द्वारा धर्म प्रचार एवं समाज सुधार हेतु कई निर्णय लिए गए थे। जाम्भाणी जनजागरण संस्थान ने इन निर्णयों की क्रियान्विति हेतु रचनात्मक पहल करते हुए इच्छा जताई। मुकाम पीठाधीश्वर एवं जाम्भाणी जनजागरण संस्थान के संरक्षक स्वामी रामानन्द जी आचार्य ने इन निर्णयों में से तीन मुख्य निर्णयों मृत्युभोज, बाल विवाह एवं नशावृति के रूप में जो कुरीतियां है इनकी रोकथाम हेतु जनजागरण अभियान चलाए जाने का निर्णय लिया। ठेकेदार श्री पपूराम डारा द्वारा निर्मित एवं समाज को समर्पित धर्मरथ से इस अभियान का प्रारम्भ हुआ। स्वामी रामानन्द आचार्य के निर्देशन एवं नेतृत्व में जाम्भाणी जनजागरण संस्थान का उक्त अभियान समाज के पवित्र तीर्थ स्थल जाम्भोलाव धाम के मेले के शुभ अवसर पर दिनांक 3.4.2011 को प्रारम्भ हुआ। अभियान के प्रथम चरण में फलौदी, ओसियां, शेरगढ़, तहसीलों के साथ जैसलमेर जिले के गांवों का दौरा किया गया। इस दौरान 80 गांवों के स्थानीय पंचों व सामाजिक कार्यकर्ताओं की सतर्कता समितियां उपर्युक्त उद्देश्यों की पूर्ति हेतु गठित करते हुए प्रथम चरण में फलौदी में तहसील स्तरीय निगरानी सतर्कता समिति का गठन किया गया जिसके अध्यक्ष श्री मालाराम राव (लोहावट), पूर्व डेयरी चेयरमैन सर्वसम्मति से चुने गये। प्रथम चरण का समापन ओसियां मेले के अवसर पर दिनांक 3.5.2011 को हुआ। एक सप्ताह के अन्तराल बाद दिनांक 12.05.2011 से दूसरा चरण जालौर जिले की सांचौर तहसील से आरम्भ हुआ और जालौर, बाड़मेर एवं पाली के 130 गांवों में सतर्कता समितियां गठित की गई। इस अभियान के दौरान सांचौर, भीनमाल, गुढामालानी एवं धोरीमन्ना में तहसील स्तरीय निगरानी समितियां गठित की गई। दूसरे चरण का समापन दिनांक 14.06.2011 को रोहट, जिला पाली में हुआ।

दो माह की इस अवधि में अभियान के दौरान समाज में अप्रत्याशित उत्साह एवं भागीदारी देखने को मिली। हर गांव में हजारों की तादाद में लोगों ने भाग लिया और सर्वसम्मति से अभियान का समर्थन किया। विभिन्न आयोजनों पर नशावृति के प्रतिबन्ध के परिणामस्वरूप लोगों को करोड़ों रुपयां की बचत हुई, दुर्व्यसन से छुटकारा मिला। एवं कुरीतियों को त्यागने हेतु समाज में जागरूकता आई।

इस अभियान का नेतृत्व स्वामी रामानन्द आचार्य मुकाम पीठाधीश्वर एवं संरक्षक जाम्भाणी जनजागरण संस्थान तथा श्री एल.आर. विश्नोई, अध्यक्ष जाम्भाणी जनजागरण संस्थान एवं पूर्व मुख्यमंत्री सलाहकार ने किया, जिनका सहयोग संस्थान के महासचिव श्री सुखराम ढाका एडवोकेट, श्री उम्मेदाराम विश्नोई सेवानिवृत पुलिस महानिरीक्षक एवं अभियान के अन्य सदस्यों ने किया। स्थानीय जन-प्रतिनिधियों एवं समाज के मुखियाओं का भी भरपूर सहयोग रहा, वे सभी धन्यवाद के पात्र हैं। यहां यह उल्लेखनीय है कि इस अभियान की उपलबिध एवं भविष्य में समाज सुधार परिणामों पर सतत् निगरानी रखने के लिए निगरानी समितियां नजर रखेगी और श्री मालाराम राव इस अभियान के संचालक के रूप में उक्त गतिविधियों का अवलोकन एवं मार्गदर्शन करते रहेंगे जिससे समाज में व्याप्त मृत्युभोज, बाल विवाह एवं नशा प्रवृति रूपी कुरीतियाँ पूर्णरूप से दूर की जा सके और समाज का आधुनिक परिवेश में तीव्र गति से विकास हो सके।

लादूराम विश्नोई
अध्यक्ष

स्वामी रामानन्द आचार्य
मुकाम पीठाधीश्वर एवं संरक्षक

अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति ने किया पौधारोपण

अखिल भारतीय गुरु जम्भेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति ने 24 जुलाई, 2011 रविवार को राजकीय प्राथमिक विद्यालय गांव भाणा में वनमहोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया। जिसका शुभारम्भ श्री सुभाष देहडू प्रधान बिश्नोई सभा, हिसार ने किया। उन्होंने समिति को पौधारोपण के लिए बधाई दी। उन्होंने समिति सदस्यों को आह्वान किया कि समाज के विकास में वे अपना योगदान इसी प्रकार देते रहें। उन्होंने इस अवसर पर एक पौधा भी लगाया। इस अवसर पर समिति के प्रधान औमप्रकाश जाजुदा ने कहा कि समिति अब तक हजारों पौधे विभिन्न स्थानों पर लगा चुकी है जो अब वट वृक्ष का रुप धारण कर चुके हैं। इस साल भी सैकडों छायादार पौधे लगाने का कार्यक्रम है। समिति के महासचिव डा. मदन खीचड़ ने बताया कि इस वनमहोत्सव कार्यक्रम में विद्यालय प्रांगण में 225 छायादार पौधे ग्राम पंचायत गांव भाणा तथा वनमण्डल अधिकारी सामुदायिक वानिकी परियोजना हिसार श्री ओमप्रकाश नैन के सहयोग से लगाए गए। वन विभाग की टीम जिसमें वन दरोगा सुधीर पूनिया, वन रक्षक जगदीशलाल, रमेश कुमार व भजनलाल ने अपनी अमूल्य सेवाएं प्रदान की। विद्यालय के मुख्याध्यापक श्री सज्जनसिंह तथा सरपंच प्रतिनिधि श्री मंगतराम ने समिति द्वारा लगाये सभी पौधों की देखभाल की जिम्मेदारी ली। इस अवसर पर गांव भाणा के रिछपाल गोदारा नम्बरदार, भागीरथ कसवां, निहाल सिंह गोदारा, नरसीराम, राजेन्द्र गोदारा, रामसिंह कस्वां, छोटूराम नाई एवं अन्य ग्रामवासी उपस्थित थे। इस अवसर पर समिति के संरक्षक प्यारेलाल कड़वासरा, कृष्ण काकड़, आत्माराम जाजुदा, महेन्द्र जाणी, कृष्ण माल, रामेश्वर राहड, श्रवण खीचड, मायाराम, सुभाष सिहाग, राजेश्वर, पालाराम करीर, रामसिंह गोदारा, रामकुमार बैनीवाल, विजय भाम्भू आदि उपस्थित थे तथा अनेक पौधे लगाए।

डा. मदन खीचड़, महासचिव
गुरु जंभेश्वर कर्मचारी कल्याण समिति, 94169-95529

बिश्नोई सभा सिरसा द्वारा चरित्र निर्माण शिविर

बिश्नोई सभा सिरसा द्वारा दिनांक 2 जून से 6 जून 2011 तक चरित्र निर्माण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें जिला के विभिन्न गांवों से 45 बच्चों ने भाग लिया। इस शिविर में 12 वर्ष से 16 वर्ष की आयु के बच्चे उपस्थित हुए। शिविर का आरंभ दिनांक 2 जून को सभा के अध्यक्ष श्री खेमचंद बैनीवाल ने श्री गुरु जम्भेश्वर के सम्मुख ज्योति प्रज्वलित करके किया। प्रतिदिन कार्यक्रम 5 बजे योग से आरंभ होता। योग श्री इन्द्राज बिश्नोई द्वारा सिखाया जाता। 6 बजे से 7 बजे हवन, 8 बजे बच्चों को नाश्ता, 9 बजे से 12 बजे तक प्रथम सत्र, 12 से 2 बजे तक खाना व विश्राम, 2 से 4 बजे तक द्वितीय सत्र 4 से 4.30

बजे अल्पाहार, 4.30 से 6 बजे तक तृतीय सत्र व 6 से 7 बजे हवन व जोत 8 बजे भोजन। इसी प्रकार 5 दिन शिविर चला। शिविर में बच्चों को विद्यार्थी जीवन में अपनाने वाले नियम, बिश्नोई धर्म कब, क्यों ओर कैसे चला तथा इसकी स्थापना किसने की, बिश्नोई धर्म के 29 नियम, गुरु जम्भेश्वर भगवान द्वारा दिए गए 120 शब्दों पर विस्तार में व्याख्या की गई। बच्चों को सभी संस्कार देने का प्रयत्न किया गया। दिनांक 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के उपलक्ष में धर्म एवं पर्यावरण पर भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। जिसमें आर.पी. स्कूल खैरेकां के छात्र-छात्राओं ने बड़े ग्रुप में पुरस्कार जीते।

सर्वश्रेष्ठ शिविरार्थी के लिए श्री विकास पुत्र श्री ओमप्रकाश धारणियां जंडवाला बिश्नोईयान को सम्मानित किया गया। श्री मनीराम सहारण प्रचार मंत्री ने अपने उद्‌बोधन में सभी का धन्यवाद किया व शिविर की उपलब्धियों पर विचार रखे। मंत्री ओ. पी. बिश्नोई ने सभी बच्चों को नीचे लिखी 5 प्रतिज्ञाएं दिलवाई व उन्होंने जो शिविर के दौरान सीखा है उन पर चलने का आह्‌वान किया तथा सभा की ओर से सभी सदस्यों, बच्चों को शिक्षा देने वाले महानुभावों का धन्यवाद किया और आगे भी ऐसे शिविर लगाने का आश्वासन दिया। श्री सोमप्रकाश बिश्नोई सदस्य कार्यकारिणी ने बच्चों से पूछा कि शिविर में रही कमियों पर अपने विचार बताएं एवं सुझाव दें। अंत में अध्यक्ष श्री खेमचंद बैनीवाल ने सभी का आभार व्यक्त किया।

प्रतिज्ञाएं :

1. मैं सच्चे मन से प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं बिश्नोई धर्म के 29 नियमों का सत्यनिष्ठा से पालन करूंगा।
2. मैं सच्चे मन से प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं बड़ों का सत्यनिष्ठा से आदर करूंगा।
3. मैं सच्चे मन से प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं विद्यार्थी के होने वाले पांचों गुणों का सत्यनिष्ठा से पालन करूंगा।
4. मैं सच्चे मन से प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं अपने घर व स्कूल में अनुशासन का पालन करूंगा।
5. मैं सच्चे मन से प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं सामाजिक बुराइयों को दूर करने में सहयोग करूंगा।

ओ. पी. बिश्नोई, मंत्री

शहीद हजारी लाल मांझू को याद किया

बिश्नोई जीव रक्षा शहीद स्मारक समिति (रजि) के तत्वावधान में वन्यजीवों के रक्षार्थ अपनी शहादत देने वाले शहीद हजारी लाल मांझू के बलिदान दिवस पर 19 मई, 2011 को उनके शहीद स्मारक स्थल मेहराणा धोरा (पंजाब) पर उनकी पुण्य स्मृति में एक श्रद्धांजलि कार्यक्रम रखा गया। जिसमें प्रात: काल मेहराणा धोरा के महंत स्वामी श्री मनोहर दास जी शास्त्री और अन्य सन्त महात्माओं ने सबदवाणी का पाठ किया और पाहल बनाया। उसके बाद कर्नल के.एल. बिश्नोई के साथ उनके एन.सी.सी. कैडेटो ने अपने परम्परागत तरीके से शहीद को सलामी दी तथा महंतजी के नेतृत्व में गणमान्य अतिथियों और अन्य लोगों ने भी शहीद को श्रद्धासुमन अर्पित किये। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री निर्मल गोदारा, विशिष्ट अतिथि कर्नल के.एल. बिश्नोई, अध्यक्ष साहब राम गोदारा और पावन संन्निधि महंत श्री मनोहर दास जी ने शहीद के जीवन और कर्मक्षेत्र पर प्रकाश डाला। महंतजी ने बिश्नोई बन्धुओं को चेताया कि वे अपने खेतों से वृक्षों को न काटें तथा नये वृक्ष लगाये तथा उनका संरक्षण करें, उन्होंने कहा कि अपने खेतों की बाड़बन्दी में नुकीले, ब्लेडनुमा घातक तारों का इस्तेमाल कभी न करें, इनके कारण वन्यजीव और बेसहारा गायें मर रही है, जो जाने-अनजाने में घोर पाप हो रहा है। हम शहीदों के संकल्पों को पूरा करने के लिये कार्य करें ताकि उनका बलिदान सार्थक बन सके। इस अवसर पर रक्तदान शिविर का आयोजन भी

किया गया, जिसमें 29 व्यक्तियों ने अपना खून दान करके शहीद को श्रद्धांजलि भेंट की। यहां पौधारोपण के साथ-साथ बिश्नोई समाज की एक अति प्राचीन परम्परा का निर्वाह करते हुए पेड़ों पर पक्षियों के लिये पानी से भरे बर्तन (कुण्डाला) टांगे गये। डबवाली से पधारे इन्द्रजीत धारणियां 'इन्द्र' ने इन कुण्डालों का महत्त्व बताते हुए कहा कि इस मौसम में लाखों पक्षी प्यासे मर जाते हैं, जिन्हें हम ऐसा करके बचा सकते हैं, कार्यक्रम में विभिन्न क्षेत्र की प्रतिभाओं का सम्मान भी किया गया।

कार्यक्रम में श्री हनुमान जी जाणी संरक्षक अ.भा. जीवरक्षा बिश्नोई सभा, कुलदीप पूनिया अध्यक्ष शहीद स्मारक समिति, श्रवण सिहाग, विष्णु धत्तरवाल, महेन्द्र मांझू, जगदीश मांझू, अक्षय डेलू, राजीव गोदारा, विष्णु धापन, अजयपाल डेलू, संजय गोदारा सरपंच, रूपिन डेलू अध्यक्ष बिश्नोई युवा संगठन, एडवोकेट संजय भादू, सुरेन्द्र सिहाग, रणजीत पन्नू आदि के अलावा आसपास के क्षेत्र से भारी संख्या में लोग शामिल हुए।

विनोद जम्भदास कड़वासरा

हिम्मतपुरा (पंजाब)

पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में श्री गुरु जम्भेश्वर चैयर स्थापित होगी, चालू वर्ष से ही अमृता देवी बिश्नोई स्टेट अवार्ड दिया जायेगा – बादल

पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला में श्री गुरु जम्भेश्वर चेयर स्थापित होगी, प्रति वर्ष 15 अगस्त को अमृता देवी बिश्नोई स्टेट अवार्ड दिया जायेगा। पंजाब के मुख्यमंत्री सरदार प्रकाश सिंह बादल ने कहा कि श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान की शिक्षाओं तथा उनके विचारों का प्रसार करवाने हेतु श्री गुरुजी की चैयर स्थापित की जाएगी। श्री बादल ने यह घोषणा श्री बिश्नोई समाज के सैंकड़ों लोगों के साथ जयपुर से आये डॉ. हीरालाल माहेश्वरी द्वारा हिन्दी में लिखित श्री गुरु जम्भेश्वरजी एवं जम्भवाणी मीमांसा ग्रन्थ का विमोचन कर आम जनता के लिए जारी करते हुए कही। इस ग्रन्थ में श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान की जीवनी एवं शब्दवाणी में प्रदान की गई शिक्षाओं की विस्तार से व्याख्या की गई है।

बिश्नोई समाज के सैंकड़ों सदस्यों की माँग पर सहमति व्यक्त करते हुए सरदार प्रकाश सिंह बादल ने कहा कि बिश्नोई समाज को अन्य पिछड़े वर्गों का लाभ प्रदान करने की लिए पंजाब सरकार सभी जरूरी एवं औपचारिक कार्यवाही पूरी करने के बाद केस केन्द्र सरकार को भेज कर देश भर में इसे लागू करने की सिफारिश की जायेगी। मोहाली में गुरु जंभेश्वर भवन हेतु भूमि प्रदान करने का प्रयास किया जायेगा। इस अवसर पर श्री पी.आर. बिश्नोई I.A.S., श्री अचिंतराम गोदारा, श्री अरुण जौहर आदि अनेक महानुभाव उपस्थित थे।

पृथ्वी सिंह बैनीवाल, बिश्नोई

प्रैस प्रभारी, श्री बिश्नोई सभा, पंचकूला (हरियाणा)

गंगा दशहरा पर्व सम्पन्न

अखिल भारतीय बिश्नोई सत्संग समिति हरिद्वार (उत्तराखण्ड) का 28वां वार्षिक समारोह 'गंगा दशहरा' पर्व दिनांक 10.11.12 जून, 2011 को पूज्य स्वामी श्री राजेन्द्रानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में श्री बिश्नोई मन्दिर भीम गोड़ा हरिद्वार में विधिवत सम्पन्न किया गया। गत 28 वर्षों से जम्भवाणी शब्द व्याख्या एवं सत्संग के रूप में समिति का कार्य संचालन प्रगतिशील है। उत्तर प्रदेश, दिली, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब आदि उत्तराखण्ड के धर्म प्रेमी उपस्थित होकर गंगा माता को श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं। इस अवसर पर बड़ी संख्या में यात्रियों ने गंगा स्नान करके पुण्य लाभ प्राप्त किया।

इस अवसर पर राजेन्द्रानन्द जी महाराज, स्वामी पी.के. महाराज, स्वामी सत्यदेवानन्द जी महाराज, स्वामी भावानन्द जी महाराज एवं स्वामी जयानन्द जी महाराज एवं योगेन्द्रपाल सिंह विश्नोई मुरादाबाद, श्री ऋषिराम जी बिश्नोई, मास्टर जय प्रकाश जी, श्रीमति इन्दू विश्नोई, पूर्णिमा विश्नोई, राधा विश्नोई, छाया विश्नोई (सम्भल), श्री सुभाष चन्द्र विश्नोई, प्रतिभा विश्नोई (काशीपुर), एवं राजस्थान के श्री भगवाना राम जी डेलू आदि गणमान्य माहनुभाव उपस्थित रहे।

योगेन्द्रपाल सिंह विश्नोई, अध्यक्ष
अखिल भारतीय विश्नोई सत्संग समिति, हरिद्वार (उ.ख.)

वैवाहिकी

MAJOR SAURABH BISHNOI

Qualification - BE (Mech) from Jaipur
Age – 24 Yrs
Height - 5'-10" (175 cm)
Birth place - Moradabad (UP)
Gotra - Pawar
Grand Father - Late Shri Phool Kumar Singh, Village-Hakimpur (Moradabad) U.P.
Grand mother - Late Smt. Pushp Lata, Village Fathepur Bishnoi (Moradabad) U.P.
Uncle - Colonel D.K. Bishnoi, Sena Medal & Bar, Commanding Officer, Military Police
Mother - Mrs Seema Bishnoi, Teacher in Air Force School, Bangalore
Sister - Miss Pallavi Bishnoi, studying in B.E. (Electrical & Electronics) in third year from Bangalore
Contact Address - Squadron Leader AKS Bishnoi, OMQ-158/3 (Officers Colony), Head Quarters Training Command, Indian Air Force, Hebbal, J.C. Nagar, P.O. Bangalore-560006
Mob-09480405589,
e-mail ID – aksbishnoi@gmail.com

गोपाल सिंह बिश्नोई

जन्म तिथि – 30 अप्रैल, 1986;
गोत्र : थोरी; **कद :** 5'-10"; **रंग** – गेहुंआ
शिक्षा : एम.एस.सी. (रसायन विज्ञान)
वर्तमान कार्य : भारतीय वायु सेना में कॉपल पद पर सेवारत (राष्ट्रपति स्काउट एवं एन.सी.सी. में 'सी' प्रमाण पत्र तथा राष्ट्रीय स्तर पर हाकी खिलाड़ी रह चुके हैं)
पिता : श्री मानाराम थोरी व.अ. (वर्तमान) R.P., SSA (BAP) जोधपुर प्रतिनियुक्ति। हिन्दी, राजनीति विज्ञान, राजस्थानी में ट्रिपल एम.ए.; बी.एड., एल.एल.बी., डी.सी.एल.एल., डी.सी.सी.आर.
माता : श्रीमती
बहन : डिम्पल बिश्नोई एमए (हिन्दी), बी.पी.एड. व एम.ए. (इतिहास अंतिम वर्ष जे.एन.वी.यू. जोधपुर)
भाई : घनश्याम सिंह बिश्नोई, एम.ए. (अंग्रेजी) व एलएल.बी.
सम्पर्क सूत्र : गांव जाम्बा, त. फलौदी, जिला जोधपुर (राज.)
मो. : 9828239363

शोक सन्देश

बड़े दुखी हृदय से सूचित किया जाता है कि पूर्व विधायक श्री सुनील बिश्नोई सुपुत्र 'बिश्नोई रत्न' स्व. भागीरथ राय बिश्नोई पूर्व डी.जी.पी. राजस्थान का 13 अगस्त, 2011 को जयपुर में निधन हो गया। वे 60 वर्ष के थे। स्वर्गीय बिश्नोई सन् 1980 और 1990 में सूरतगढ़ विधानसभा क्षेत्र से विधायक निर्वाचित हुए थे। वे एक दबंग राजनेता व समर्पित समाज सेवी थे। वे राजस्थान स्पोर्ट्स बोर्ड कमेटी के सदस्य भी रहे थे। स्व. बिश्नोई की धर्मपत्नी श्रीमती विजय लक्ष्मी बिश्नोई (सुपुत्री श्री पूनमचंद जी बिश्नोई, जोधपुर) भी सूरतगढ़ से विधायक व राजस्थान सरकार में संसदीय सचिव रह चुकी हैं। श्रीमती बिश्नोई वर्तमान में राजस्थान महिला कांग्रेस की प्रदेशाध्यक्ष हैं। स्व. बिश्नोई अपने पीछे धर्मपत्नी श्रीमती विजयलक्ष्मी, पुत्र अनिरुद्ध, पुत्रवधु कार्तिका, पौत्र उदयभान, सुपुत्री नताशा, दामाद अनुपाल गोदारा व दोहते शिवार्जन को छोड़ गए हैं। स्व. बिश्नोई की तीन बहनों श्रीमती सुनीता, अनीता, सरिता में से श्रीमती सरिता गंगानगर की जिला प्रमुख भी रह चुकी हैं। आपके अनुज श्री अनिल बिश्नोई भी एक समर्पित समाजसेवी हैं जो इस समय गुरु जम्भेश्वर चेरिटेबल ट्रस्ट, बीकानेर के अध्यक्ष हैं। अमर ज्योति पत्रिका परिवार जम्भेश्वर भगवान से प्रार्थना करता है कि इनके परिवार को धैर्य प्रदान करें तथा दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे।

श्री प्रेम कुमार राहड़ (टी.आई.) पुत्र श्री जोरावर सिंह राहड़ निवासी गांव लांधड़ी, वर्तमान पता म.नं. 287, सैक्टर 15, हिसार का 14 मई, 2011 शनिवार को सायं 7.30 बजे अचानक हृदय गति रूकने से देहान्त हो गया। अमर ज्योति पत्रिका परिवार जम्भेश्वर भगवान से प्रार्थना करता है कि इनके परिवार को धैर्य प्रदान करे तथा दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे।

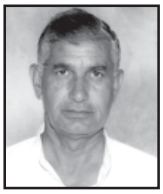

मंगलचन्द धत्तरवाल पुत्र श्री बोगाराम धत्तरवाल निवासी गांव आदमपुर का 25 जून, 2011 को 54 वर्ष की आयु में एक सड़क दुर्घटना में निधन हो गया। इनका भरा-पूरा परिवार समाज सेवी है। अमर ज्योति पत्रिका परिवार जम्भेश्वर भगवान से प्रार्थना करता हैकि इनके परिवार को शक्ति प्रदान करे तथा दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे।

डा. किशनाराम बिश्नोई, सहायक प्रोफेसर (गुरु जम्भेश्वर धार्मिक अध्ययन संस्थान, गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रोद्यौगिकी विश्वविद्यालय, हिसार) की माता श्रीमती गंवरी देवी का स्वर्गवास दिनांक 07 जुलाई, 2011 को हो गया है। इनकी उम्र 86 वर्ष की थी। अमर ज्योति पत्रिका परिवार श्री गुरु जम्भेश्वर भगवान से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान दें तथा शोक संतप्त परिवार को दु:ख सहने की शक्ति प्रदान करे।

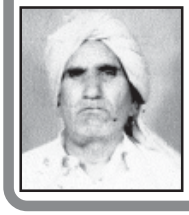

श्री कुरड़ाराम भादू पुत्र श्री रामकरण भादू निवासी गांव धांगड़, तह. व जिला फतेहाबाद का 10 अगस्त, 2011 को 86 वर्ष की आयु में निधन हो गया। इन्होंने लगभग 45 वर्ष हिसार के सेवक दल में सेवा की थी। अमर ज्योति पत्रिका परिवार जम्भेश्वर भगवान से प्रार्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे।